भगवत् कृपा

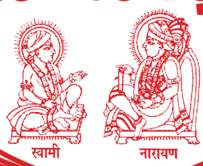

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 33 अंक : 6	22.11.2010 सोमवार (नवंबर – दिसंबर)	शुल्क – प्रति अंक : ₹ 10.00 वार्षिक : ₹ 50.00

बड़े घर दीवाली शिविर...

मंदिर के हॉल का नवीनीकरण होने के बाद अबकी बार वहीं पर **'बड़े घर दीवाली शिविर'** करने का आयोजन किया गया। अमदावाद-मुंबई के हरिभक्त **३ नवंबर** की सुबह दिल्ली मंदिर आ पहुँचे। इस दिन सुबह ८:०० बजे **धनतेरस** निमित्त प.पू. गुरुजी की निश्रा में महापूजा संपन्न हुई। साथ ही मंदिर के हॉल में शिव-शक्ति, राधा-कृष्ण एवं सिया-राम की मूर्तियों की स्थापना **प.भ. मल्कानी अंकल, प.भ. मोहन बंसलजी एवं प.भ. राजेश बजाजजी** ने की। इन मूर्तियों की स्थापना के विषय में बात करते हुए प.पू. गुरुजी ने कहा–

इन मूर्तियों का स्थापन होने से भक्तों के लिए अपने-अपने मनभावन देवों के ज़रिए महाराज के पास पहुँचने का रास्ता आसान हो गया। हर एक को कहीं न कहीं अपनी-अपनी आस्था होती है... अपने मनभावन देव के दर्शन करने जो भी आएगा, उसे सीधा महाराज का संबंध होगा...

महापूजा के बाद प्रसाद लेकर सभी ने प्रस्थान किया और प.पू. गुरुजी करीब चालीस मुक्तों के साथ **प.भ. गिरीश गुप्ताजी** के घर पधरामनी के लिए गए।

सायं पौने सात बजे मंदिर के हॉल में अमदावाद के **प.भ. परिमलभाई** ने दीप प्रज्ज्वलित करके 'बड़े घर दीवाली शिविर' का उद्घाटन किया। अब की बार प.पू. गुरुजी ने शरदपूर्णिमा के मंगलकारी दिन पर ही बता दिया था कि शिविर में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के जीवन चरित्र में से प्रसंग पढ़ेंगे, जिससे कि हम गुणातीत रीति-नीति को जान कर उस रास्ते पर चलने लगें। और तो और, तभी से प.पू. गुरुजी ने ऐसे सारे प्रसंग ढूंढ व निशान लगा कर रख लिए थे। सच, अपने आश्रित मुक्तों की प्रगति करवाने के लिए प.पू. गुरुजी स्वयं कितने गरजू बने हैं, यह सोच कर हृदय गद्‌गद् हो उठता है और अंतर से यही प्रार्थना

निकलती है कि हे गुरुजी! आप जैसा चाहते हैं, वैसा अब हम सहज ही वर्तने लगें और आपको अपनी ओर से ठंडक प्रदान करें। यूँ, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंद-स्वामिजी के जीवन के प्रसंग पढ़ते हुए प.भ. राकेशभाई ने शिविर का आरंभ किया।

अगले दिन **४ नवंबर–अक्षरचौदस** के शुभ दिन सुबह १०:०० बजे करीब ७० मुक्तों के साथ प.पू. गुरुजी **प.भ. मनीष साबुजी** के घर महापूजा करने के लिए गए। वहाँ दोपहर को प्रसाद लेकर सभी मंदिर लौटे और सायं मंदिर के हॉल में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के जीवन प्रसंगों का सभी ने लाभ लिया।

५ नवंबर–दीवाली के मंगलकारी दिन सुबह ६:५० बजे प.पू. गुरुजी की निश्रा में 'फिक्स्ड टाईम धुन' करने के पश्चात् बहनें-भाभियाँ अन्नकूट महाप्रसाद के लिए सब्जियाँ काटने की सेवा में जुट गईं। दोपहर बारह बजे, हर वर्ष की भाँति, प.पू. गुरुजी करीब ७०-८० मुक्तों को लेकर **प.भ. वी.के. अग्रवालजी** के घर पधरामनी के लिए गए और प्रसाद लेकर मंदिर वापिस आ गए। सायं ४:३० बजे मंदिर के पीछे के परिसर में 'शारदा पूजन' के निमित्त, प.पू. गुरुजी की निश्रा में, महापूजा एवं सभा हुई। रात को प्रसाद लेकर सभी अगले दिन के लिए अन्नकूट की तैयारियों में लग पड़े।

६ नवंबर–अन्नकूट एवं गोवर्धन पूजा की प्रातः से ही मुक्त अपने-अपने घरों से श्री ठाकुरजी के भोग के लिए व्यंजन लेकर आने लगे। वार्षिक स्नेहमिलन का हर्षोल्लास चारों ओर दिखाई देता था। सुबह करीब पौने दस बजे सभा प्रारंभ हुई। मंच की पृष्ठभूमि पर भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों के दर्शन हो रहे थे। इस पृष्ठभूमि में लिखा था –

भगवान स्वामिनारायण की शुद्ध गुरुपरंपरा से प्रभु धरती पर अखंड प्रगट हैं। इन्हें जो पहचाने वह 'भक्त' कहा जाए!

प.भ. राकेशभाई, प.भ. विनोदजी (पंजाब) एवं प.भ. हृदय वर्मा ने भजन गाकर पूरे मौहोल को दिव्यता से भर दिया और... वह मंगल घड़ी भी आ पहुँची जब प.पू. गुरुजी ने निम्न मुद्दों पर नए वर्ष की आशिष वर्षा की–

- *हमारे जीवन में होली की दीवाली करे, वह संत।*
- *जब से मैं सत्संग से जुड़ा, तब से आज तक का मेरा अनुभव बोलता है कि कोई भी घटना घटी होगी — बड़ी-छोटी, भली या बुरी–उससे हम प्रभु के नज़दीक ही आए होंगे।*
- *काकाजी हमेशा बोलते थे – धीस पावर हाऊस इज़ कॉन्सटन्ट एण्ड कन्टीन्यूअस; यह पावर हाउस आज भी जारी है और अखंड रहने वाला है। इसीलिए हमारी रोज दीवाली है।*
- *कोई भी व्रत, कोई भी तप, कोई भी दान, कोई भी योग, कोई भी यज्ञ, कोई भी तीर्थाटन, कोई भी जगराता 'प्रभु मेरे साथ हैं' – यह एहसास नहीं कराएगा; जबकि ऐसे सच्चे संत तुम्हें एहसास करा देंगे कि प्रभु तुम्हारे साथ हैं और यह आजमाने के लिए ऐसे संत की स्मृति के साथ 'स्वामिनारायण' मंत्र का जाप...*
- *सत्संग में 'हर एक प्रगति करता हुआ चैतन्य है' – यह हम मानें तो कि हम किसी की झंझट*

में क्यों पड़ें? कोई कैसा भी होगा तो उसे प्रभु संभालेंगे, जिस प्रकार हमें आज तक संभाला है।

- *ज्यादातर हमें यह बीमारी है कि दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते हैं, इसी चिंता में हम ज्यादा रहते हैं।*
- *प्रभु से दयालु कोई तत्त्व है ही नहीं, पर **इनकी दया, इनका लगाव जीव के ऊपर है।** इसका मतलब यह भी नहीं समझना कि हमारे संसार का कोई ठिकाना नहीं रहने वाला। साधु हमारे जीवन में - हमारे संसार में आते हैं, हमारे संसार को अमरत्व और अमृतत्व देने के लिए; न कि उसे उजाड़ने के लिए।*
- *बाहर-भीतर हर एक चीज के कर्ता-हर्ता मेरे प्रभु हैं। हमें दूसरे किसी आधार की जरूरत नहीं है। दूसरे आकार भी देखने की जरूरत नहीं कि फलां ने ऐसा किया! नहीं, उसमें से मेरे प्रभु ने ही किया।*
- *जो एटेन्शन में नहीं रहता है, वह टेन्शन में चला जाता है। एटेन्शन क्या? प्रभु मेरे हैं, मेरा अहित होने ही नहीं देंगे – यह निष्ठा पकड़े रखनी है।*

तत्पश्चात् हर वर्ष की तरह प.पू. गुरुजी के साथ पुरुषवर्ग श्री ठाकुरजी की आरती करने के लिए हॉल में गया। नीचे सभा मंडप में ही स्क्रीन पर बहनों एवं भाभियों ने आरती के दर्शन किए और संतों एवं पुरुषवर्ग के लौटने के बाद अन्नकूट के दर्शन करने के लिए हॉल में गईं। और फिर... सभी ने कढ़ी, चावल एवं मिक्स सब्जी का महाप्रसाद लिया। महाप्रसाद को लेने के लिए मुक्तों का तांता लगा हुआ था। कई तो वर्ष के केवल इस दिन यह महाप्रसाद लेने के लिए आ ही जाते हैं।

सायं ५:०० बजे श्री ठाकुरजी के समक्ष लगे विभिन्न व्यंजनों का प्रसाद उपस्थित हरिभक्तों को दिया गया। अन्य सूखी सामग्री का प्रसाद अलग-अलग प्रांतों के हरिभक्तों के लिए पैक कर दिया गया, ताकि जो नहीं आ पाए, वे अपने स्थान पर यह महाप्रसाद प्राप्त कर सकें। प्रसाद वितरण के बाद बहनों एवं भाभियों ने अन्नकूट के बर्तन माँजने की सेवा की। यह सेवा करने के बाद ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की पुष्प-समाधि पर गुजरात के मुक्तों ने गरबा एवं पंजाब के मुक्तों ने भांगड़ा करके मानो अन्नकूटोत्सव का समापन किया और... अपने-अपने घरों के लिए प्रस्थान किया।

दूसरे दिन – **७ नवंबर, नूतन वर्ष एवं भैयादूज** के मंगल अवसर पर पंजाब, अमदावाद एवं दिल्ली के भाइयों ने **प.पू. दीदी** से भैयादूज का टीका लगवा कर धन्यता अनुभव की। तत्पश्चात् **प.भ. पुरी अंकल** की इच्छा के मुताबिक मंगल त्यौहारों के निमित्त दोपहर को करीब ८० मुक्तों के साथ प.पू. गुरुजी उनके घर प्रसाद लेने के लिए गए।

सायं ५:०० बजे मंदिर के हॉल में नए वर्ष के निमित्त प.पू. गुरुजी की निश्रा में पू. यज्ञप्रियस्वामी ने महापूजा की और बाद में हर सात तारीख के अनुसार नए वर्ष की पहली भजन संध्या हुई और सभी ने प्रसाद लिया।

८ नवंबर की सायं सभा में गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा कही बोध-कथाओं को पढ़वा कर उनमें निहित कई आध्यात्मिक रहस्य समझाए और बताया

कि किस कारण हम हमें मिले ऐसे प्रगट प्रभु का जोग होने के बावजूद, अपने पुराने रवैये को छोड़ कर, सच्चा सुख नहीं ले पाते।

अगले दिन ९ नवंबर की सुबह महापूजा के पश्चात्, अमदावाद एवं दिल्ली के पचास मुक्त प.पू. दीदी के साथ प.भ. बुधरामजी के घर बख्तावरपुर गए। दरअसल प.पू. गुरुजी भी जाने वाले थे, लेकिन थोड़ी अस्वस्थता के कारण वे नहीं जा पाए। ऐसा जान कर प.भ. बुधरामजी थोड़े उदास जरूर हुए, लेकिन तुरंत ही प.पू. दीदी एवं सभी हरिभक्तों में प.पू. गुरुजी को निहारते हुए वे आवभगत में जुट गए। प्रसाद की बहुत ही अच्छी व्यवस्था की हुई थी। सच, उनकी भावना को खूब-खूब धन्यवाद!

इसी दिन सायं भी प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज की बोध-कथाओं में से प्रसंग पढ़वा कर समझाया कि हम व्यवहार में उलझे रह कर, प्रभु द्वारा दी मूर्ति रूपी पारसमणि का सही उपयोग नहीं करते और वे जो सुख देना चाहते हैं, वह प्राप्त नहीं कर पाते।

१० नवंबर – **लाभपंचमी** की सायं हर वर्ष की भाँति सभी मुक्तों को अपने दर्शन, सेवा, समागम का लाभ देने के लिए प.पू. गुरुजी गुजरात एपार्टमेन्ट्स में **पू. हंसा दादी** के यहाँ गए। मंदिर में आए सभी मुक्त भी वहाँ सभा में पहुँचे। प.पू. गुरुजी ने यहाँ सभा में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के जीवन चरित्र में से प्रसंग पढ़वा कर भगवान स्वामिनारायण की महिमा एवं उनके संतों की शिस्त से सभी को अवगत करवाया कि उनका उद्यम संबंध में आए जीव को केवल सुखी करने का होता है। सभा के बाद शीखंड-पूरी एवं भरवाँ बैंगन का प्रसाद लेकर सभी ने प्रस्थान किया।

११ नवंबर की दोपहर को अमदावाद से आए मुक्त, हृदय में 'बड़े घर दीवाली शिविर' की स्मृतियाँ संजोए हुए अश्रु भीगी आँखें लिए, आश्रम एक्सप्रेस ट्रेन द्वारा लौटने निकले। पिछले दस दिन में प.पू. गुरुजी का जो सतत सान्निध्य उन्होंने प्राप्त किया, उसकी कमी महसूस न हो इसलिए प.पू. गुरुजी ने बच्चों के लिए, उनके मनपसंद नाश्ते के अलग-अलग पॅकेट बनवा कर दिए। स्वाभाविक ही है कि प्रसाद रूप नाश्ता करते हुए वे प.पू. गुरुजी को याद करेंगे और इन्हीं स्मृतियों की सौगात लेते हुए अमदावाद पहुँच जाएंगे।

खूब धन्यवाद ऐसे मुक्तों को जो **दीवाली** के दिनों में, अपने-अपने घर बंद करके, प.पू. गुरुजी के पास दिल्ली आ जाते हैं। दूसरी ओर – इन मुक्तों के आने से प.पू. गुरुजी के चेहरे पर खुशी भी देखते ही बनती है।

सो, बड़े घर दीवाली शिविर की पूर्णाहुति रूप प.पू. गुरुजी से यही प्रार्थना कि प.पू. काकाजी के सिद्धांत को पकड़ कर आपने कुटुंबभाव के सत्संग का जो बीड़ा उठाया है, उसमें हम अपने मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार को छोड़ कर, आपके अभिप्राय में, बिना किसी रीज़र्वेशन्स के जुड़ जाएं...

('बड़े घर दीवाली शिविर' में प्रगट संत के संबंध से सदैव - सर्वथा सुखी रहने प.पू. गुरुजी द्वारा दी गई मार्मिक सूझ के रहस्यरूपी सूत्रों से सभी मुक्त 'भगवत् कृपा' के अगले अंक से लाभान्वित हो पाएंगे।)

✡✡✡

स्वामिश्रीजी

सौरभ - २२

श्री स्वामिनारायण भगवान को नमो नमः

श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराजाय नमो नमः

प्रत्यक्ष धाम-धामी मुक्तों को नमो नमः

...मुझे साधु-संतों के प्रति कोई आकर्षण नहीं था। परंतु , व्यवसाय के ज़रिए मेरे पुराने परिचित पू. कीर्तिभाई जानी का अप्रैल-मई १९९६ में एक दिन अचानक दिल्ली से फोन आया कि हमारे गुरुजी यहाँ से पंजाब जा रहे हैं। वे रास्ते में पानीपत प.भ. शमीमजी के यहाँ कॉफी-नाश्ता (अल्पाहार) करने के लिए रुकेंगे। यदि आप मिलने आओ तो अच्छा रहेगा। उस समय मैंने सोचा कि चलो, कीर्तिभाई के आग्रह पर एक बार मिलने चला जाता हूँ।

सो, अगले दिन मैं अकेला ही वहाँ प.पू. गुरुजी को मिलने गया। और... तब अचानक मुझ में ऐसे भाव जागे कि जैसे कोई मिल गया! कौन मिला, यह तो पूरा ख्याल न था; पर अपूर्ण को कोई पूर्ण मिल गया, कोई अपना मिल गया-कोई ऐसी दिव्य शक्ति जिसने आत्मा को अपना बना लिया। पहली दृष्टि में ही भेद कर वे अंतरात्मा में बैठ गए! ...आकर्षण ऐसा कि मूर्ति आँखों से ओझल ही न हो! उनके कहे शब्द – *'एक बार मंदिर आना...'* लगातार कानों में गूँजते रहे। **ऐसा था वो पहला दर्शन! प.पू. गुरुजी की प्रभुता का एहसास!**

... १ फरवरी १९९७ से ३ फरवरी १९९७ तक प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती मनाई गई। मैं भी परिवार सहित तीन दिन के प्रोग्राम में शामिल होने दिल्ली मंदिर में आया था। हम नए-नए थे और व्यवस्था इत्यादि के बारे ज्यादा कुछ जानकारी नहीं थी। एक-दो हरिभक्तों ने मुझे अपने यहाँ ठहरने का निमंत्रण भी दिया, पर संजोगवश मैं मंदिर में ही बैठा रहा। रात को मुझसे प.पू. गुरुजी ने अचानक पूछा कि *कहाँ ठहरे हो।* मैंने कहा– *'रिश्तेदारों के यहाँ।'* गुरुजी ने मुझे सहज ही कह दिया– *चलो, आप मेरे साथ मेरे कमरे में ठहर जाओ। अपना बैग वहाँ ले आओ।* मैं तो एकदम सन्न रह गया कि अन्य जगह तो लोग अपने गुरु के दर्शन के लिए मौका तलाशते रहते हैं और यहाँ तो प.पू. गुरुजी इतने सरल, उदार, गरजु बने हैं, वो भी इतने बड़े उत्सव में! जबकि वे स्वयं भी सभी स्वरूपों की सेवा में खूब व्यस्त थे। धन्य हैं ऐसे गुरुदेव! **इन्होंने अपने जीवन में किसी चीज पर एकाधिकार रखा ही नहीं। सब कुछ भक्तों के लिए, उन्हें राजी करने के लिए...**

हमारे परिवार में मैं और नवनीत दो भाई ही हैं, कोई बहन नहीं है। मेरे (और अंजलि के) यहाँ दो पुत्र वैभव और ऋषभ ही हैं, यानि उनकी भी कोई बहन नहीं। तब तक नवनीत की शादी नहीं हुई थी। सो, हमारे परिवार में एक लड़की की कमी बहुत ही खलती थी। प.पू. गुरुजी ने खूब ही कृपा करके हमारे जीवन की इस कमी-खालीपन को भरते हुए (अक्षरज्योति की साधक बहन) पू. स्मिता दीदी को हमें बेटी के रूप में दिव्य संबंध से जोड़ दिया और यह **एहसास** भी **करवाया कि जो-जो मुमुक्षु भगवान के रास्ते पर चलते हैं या चलने की भावना रखते हैं, उनके जीवन में वे कोई कमी नहीं रहने देते!**

...सितंबर २२, १९९९ को नवनीत और सौ. महक की शादी का शुभ प्रसंग हमारे परिवार में हुआ। तब इस अवसर पर प.पू. गुरुजी एवं समस्त दिल्ली सत्संग समाज की ओर से हमें एक ऐसी भेंट, मानो प.पू. गुरुजी ने बख़्शिश में मूर्ति लुटा दी। वो भेंट थी हमारे धर्मकुल – यानि भगवान स्वामिनारायण सहित सभी गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों से सुशोभित बहुत ही सुंदर मंदिर! यूँ, **प.पू. गुरुजी ने हमारे घर में गुणातीत समाज के सभी स्वरूपों की मूर्तियाँ अपने करकमलों से स्थापित करके एक ओर तो सर्वदेशीयता का अनूठा**

उदाहरण दिया और दूसरी ओर उनके मन में सभी गुणातीत स्वरूपों का क्या स्थान है, इसका हमें दर्शन करवाया...

इस मंदिर की स्थापना के समय प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद भी बरसाए– *इस मंदिर के सामने जो भी सच्चे मन से विश्वास रख कर पंद्रह मिनिट धुन करेगा, उसकी हर समस्या हल हो जाएगी।* किन शब्दों में इसको व्यक्त करूँ? बस अनुग्रह है उनका हम पर!

हे गुरुजी! आपने तो देने में यानि लाड़ लड़ाने, रक्षा करने, सुखी-सुखी करने, प्रगट की निष्ठा दृढ़ करवाने में कोई कमी रखी नहीं है। पर, जैसे कि आप अकसर कहते हैं – आशीर्वाद झेलने पड़ते हैं। आप जैसे गुणातीत पुरुष का कहा एक-एक शब्द अंकुरित है ही! वो पौधा कल कभी न कभी हरा-भरा होना ही है और वह मौका आपने हमें दिया है – इसका खूब ख्याल भी है। तो हमें बल देना कि मन-स्वभाव की हार हो और आपके प्यार की जीत। एक गरज तो जरुर है कि अपने संबंध की जो पूँजी आपने हमें मुफ़्त में दी है, वह हम व्यर्थ न जाने दें।

प.पू. पप्पाजी ने देह छोड़ने से पहले बीमारी ग्रहण की थी। उन दिनों हम जब-जब मंदिर आते, तब-तब मैंने देखा कि प.पू. गुरुजी खूब ही प.पू. पप्पाजी की ही स्मृति में डूबे से रहते। जैसे कोई बच्चा अपने परिवार के बुज़ुर्ग (चाचा-ताऊ) की ऐसी अवस्था देख कर उदास-चिंतित हो जाता है। जबकि हम सबने देखा है कि प.पू. गुरुजी को प.पू. काकाजी के साथ खूब यानि खूब ही लगाव है। सभाओं में भी ऐसा आभास हुआ है। प.पू. काकाजी द्वारा उनको लड़ाए लाड़ याद करके जैसे वे कई बार खूब भावुक (इमोशनल) हो जाते हैं; उसी प्रकार प.पू. पप्पाजी के प्रति भी उनकी वैसी ही प्रीति व भक्ति का दर्शन हुआ है। इसकी प्रतीति तो पूरे गुणातीत समाज को दिल्ली मंदिर में प.पू. पप्पाजी की मूर्ति प्रतिष्ठा के समय हुई ही थी। इस प्रसंग का स्मरण होते ही आज भी मेरा मन भीतर से गद्‌गद् हो जाता है।

इसी प्रकार **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** के अच्छे स्वास्थ्य के लिए भी प.पू. गुरुजी को हमेशा कन्सर्न्ड देखा है। यहाँ तक कि हर रोज दिल्ली मंदिर में जो महापूजा होती है, उसमें प.पू. स्वामिजी को '**धरती का मंगल**' मानते हुए, उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिए प.पू. गुरुजी खास प्रार्थना करवाते हैं...

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई एवं **पू. वशीभाई** के साथ का उनका संबंध तो हमें सुहृद्‌भाव, मैत्रीभाव, सखाभाव क्या होता है, इसका अनूठा दर्शन लगातार करवा रहा है।

अपने वर्तन से सर्वदेशीयता का सिद्धांत वे जो जीकर सिखा रहे हैं, वह बेजोड़ (अनपॅरेलल) है। पिछले दस सालों में हमने प.पू. गुरुजी को 'संपूर्ण गुणातीत समाज एक' की भावना को हम सभी के भीतर दृढ़ करवाने की जो गरज देखी है, उसे तो शब्दों में बयान करना मेरे लिए असंभव है।

इतना ही कहूँगा कि भले मैंने वचनामृत, स्वामी की बातें कुछ खास न पढ़ी हों-न समझी हों, पर प.पू. गुरुजी का जीवन दर्शन करके ख्याल तो पड़ ही गया है कि हमें किस प्रकार का आध्यात्मिक जीवन जीना चाहिए।

...मैंने पढ़ा था कि गुरु की परख करनी हो तो उसके गुरु कैसे थे, वह देखना और उसके शिष्य कैसे हैं, वह भी देखना। मैंने जब यह पढ़ा तो मैं भावुक हो गया, क्योंकि मुझे एकदम एहसास हुआ कि भले ही मैंने प.पू. गुरुजी की ऐसी कोई कसौटी (टॅस्टिंग) नहीं की थी, परंतु वे गुणातीत परंपरा के सच्चे सद्‌गुरु हैं, इसमें तो कोई संदेह ही नहीं! उन्हें तो गुरुहरि योगीजी महाराज व प.पू. काकाजी का वारसा मिला है।

और... यहाँ के सत्संग समाज–**पू. आनंदी दीदी** की निश्रा में अक्षरज्योति की सभी बहनें एक पवित्र, गुरुमुखी-माहात्म्ययुक्त सेवाभाव से जीती हैं। एक पल भी ऐसा नहीं जिसमें काकाजी-गुरुजी शामिल नहीं। हमेशा हँसते चेहरे से निरंतर सेवा-भक्ति! हर क्रिया स्वरूपलक्षी। सभी बहनें सेवा एवं भक्ति का जीता-जागता उदाहरण हैं।

कितने ही ऐसे हरिभक्त हैं, किस-किस के नाम लें? तभी तो 'योगी गीता' में योगीजी महाराज द्वारा लिखित प्रार्थना का स्मरण हो आता है कि आप तो कैवल्यमूर्ति हो ही, पर आपके संबंध वालों को भी कैवल्यमूर्ति मान सकें, ऐसा हमें बनाना! न केवल गुरुजी, बल्कि सभी हरिभक्तों ने हमें हम जैसे हैं, वैसे ही हमें अपनाया और अपने दिल में जगह दी। तो ख्याल पड़ता है कि प.पू. गुरुजी के संबंध से मुझे क्या हासिल हुआ है...

हम सभी ने खूब अच्छी तरह देखा है कि **प.पू. गुरुजी की एक भावना है कि जो-जो परिवार उनसे जुड़े हैं, उन सभी के संबंध न केवल सत्संग में बल्कि अपने-अपने घरों में आपस में भी बहुत ही मीठे हों।** ३६ का आंकड़ा न होकर ६३ की तरह एक-दूसरे के पूरक बन कर सम्मुख होकर जिएँ। चाहे सास-बहू का रिश्ता हो, जेठानी-देवरानी का हो, भाई-भाई का हो या पति-पत्नी का हो। वे अकसर कहते हैं कि 'Charity begins at home.'

...आमतौर पर और (अन्य) जगहों पर तो हमने देखा है कि जो भी व्यक्ति किसी गुरु से जुड़ जाता है, तो बस सारी कोशिश उसे अपनी ओर खींचने की होती है। चाहे घर-परिवार टूट जाए, बस अपना ही फायदा देखा जाता है। परंतु गुरुजी का तो अथक् परिश्रम इसीलिए है व अंतर की प्रसन्नता भी इसी में है कि परिवार में हम सब मिलजुल कर रहें। धन्य हैं ऐसे गुरुजी! इसका उदाहरण है प.पू. गुरुजी द्वारा मुझे और नवनीत को दी गई आदर्श बंधुजोड़ी की ट्राफी!

हम सभी ने प.पू. गुरुजी के प्रवचनों में कई बार यह बात सुनी है कि *साधु जितनी ऊँची कक्षा पर होता है, उतना ही वह सरल स्वभाव वाला होता है और उसका एक ही लक्षण है कि वह अपनी ताक़त-स्वरूप को उतना ही छुपा कर रखता है। पल-पल का कर्ता-हर्ता प्रभु को ही मानता है।* यह सुन कर मुझे **प.पू. काकाजी** की कही बात याद आती है– ***मुकुंद ऐसा साधु है कि जिसे पहचानने में बड़े-बड़े साधु भी धोखा खा जाएँगे!***

सौभाग्य से मुझे प.पू. गुरुजी के साथ रहने का, उनका जीवन **बहुत करीब से देखने का मौका मिला है। चौदह वर्षों के इस संबंध में मैंने एक भी पल ऐसा नहीं देखा कि गुरुजी प.पू. काकाजी से हट कर-उनकी स्मृति के बिना जिए हों!**

...सुना है– **'जिस साधु का दर्शन होते ही आभास हो जाए कि ये मेरे हैं व भीतर में शांति-शांति हो जाए, तो समझना कि उसमें प्रभु का अखंड निवास है।' यह अनुभव हम सभी ने प.पू. गुरुजी में किया है** और एक बार तो अपना दिल और दिमाग़ उनके आगे झुक ही जाता है। भले ही बाद में हम अपने स्वभाव के वश उनकी हर एक क्रिया दिव्य न भी मान पाएं...

तो, हे गुरुजी! बहुत ही अनुग्रह करके-दया करके आपने मुझे जो अपना यह संबंध दिया है, तो जैसी स्वरूपनिष्ठा भीतर में होनी चाहिए, वैसी दृढ़ करवाना-अखंड रखवाना... आपके संबंध से जीतेजी अक्षरधाम का जो सुख आप हमें दे रहे हैं, कृपा करके हमें व नई पीढ़ी को हमारी आख़िरी साँस तक अपनी इसी देह में यह सुख देते रहना–ऐसी प्रार्थना!!

– पुनीत गोयल, पानीपत

सौरभ - २३

સ્વામિશ્રીજી

✻ **'જોગીડાને જોવા ગયા રે, જોનારા ઝડપાણા.....જ્ઞાનગંગામાં તણાણા'**

અમારી નીચેના ફ્લોર પર એક સત્સંગી બ્હેન રહેવા આવ્યા. પ્હેલા એ મંદિરની પાસે રહેતા હતા. પ.પૂ.ગુરૂજીએ એમને એપાર્ટમૅન્ટ રહેવા મોકલ્યા'તા. એમને કહેવડાવેલું કે ત્યાં તું જે બ્લૉકમાં રહેવા જઈશ એમાંથી એકને પાકો સત્સંગ થશે. એ બ્હેન જ્યારે બિમાર પડયા ત્યારે મને અઠવાડિયું પડોસીના નાતે સેવાનો મોકો મળ્યો. ત્યારે એ મને પ.પૂ. ગુરૂજીની મહિમાની ઘણી વાતો કરતા. શરૂઆતમાં મને એમની વાતોમાં ઇન્ટ્રેસ્ટ ન્હોતો આવતો. અમે જૈન છીએ એનો પ્રાઈડ વધારે હતો. પણ ઘણી મહિમાની- આનંદની વાતો સાંભળી, તો મનમાં થયું કે એકવાર એમના ગુરૂજીને જોવા તો જઈએ કે એ કેવા છે ? પહેલી વાર જ પ.પૂ. ગુરૂજીના દર્શન કર્યા, તો થોડીવાર બેઠા પછી આંખમાંથી આંસુ નીકળવા લાગ્યા. મને ખબર પણ ન્હોતી પડતી કે રડવું કેમ આવે છે. થોડા દિવસ પછી પ.પૂ. ગુરૂજી એક વાર સભામાં બોલેલા કે **'જીવ જ્યારે જગતનો મટી ભગવાનનો થાય છે, ત્યારે સાક્ષી ભેદાય છે ને ત્યારે કેટલાકને રૂદન થાય છે'.** આમ પ.પૂ. ગુરૂજીને જોવા આવી'તી એમાં ઝડપાઈ તો હું જ ગઈ ! હવે એમની જ્ઞાનગંગામાં તણાઈ જઈએ, અધૂરા ન રહી જઈએ.

જ્યારે હું સત્સંગમાં આવી ત્યારે મારાં ઘરમાંથી બીજા કોઈને સત્સંગ ન્હોતો, એટલે મારે મંદિરે જવાનું ઓછું થતું. પણ મારૂં દર્શનનું અંગ, એટલે દર્શનની ઇચ્છા ખૂબ રહેતી. જ્યારે- જ્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીના દર્શનની ઇચ્છા થાય, ત્યારે- ત્યારે કોઈ ને કોઈ બહાને પ.પૂ. ગુરૂજી અંતર્યામીપણે એપાર્ટમૅન્ટ આવતા અને એમના દર્શન કરીને મારું અંતર શાંત થઈ જતું. થોડા દિવસ સુધી પ.પૂ. ગુરૂજી આવ્યા ન હોય કે હું દર્શન કરવા ન જઈ શકું ત્યારે અંદરથી અકળામણ થાય અને મનમાં જ પ.પૂ. ગુરુજીને કહું કે હું દર્શન કરવા તમારી પાસે નથી આવી શકતી, હું મજબૂર છું , તમે થોડા મજબૂર છો ? તમે તો અહીં આવો. એ દિવસે અંતર્યામીપણે એ જરૂર આવતા. મને દર્શન થતાં જ શાંતિ થઈ જતી હતી. **અંતરનો પોકાર એ જરૂર જરૂર સાંભળે જ છે.**

✻ **કર્યું કાંઈ અમે નહીં સર્વ તે કર્યું, સંબંધ સ્થાપી ટકાવી સ્મિત તે જાળવ્યું...**

નાનપણમાં કોઈ જ્યોતિષે કહ્યું હતું કે લગન પછી એના આઠ વર્ષ બહુ જ કપરા છે. જેમ- તેમ એ ટાઈમ નીકળી જાય, તો પછી સુખ જ સુખ છે. હું તો એ વાતને ભૂલી ગઈ હતી. એકવાર પ.પૂ.દીદી મારફતે પ.પૂ. ગુરૂજીએ મને **'ફુટપ્રીન્ટ્સ ઇન ધી સેન્ડ'** વાળુ પોસ્ટર મોકલેલ અને કહેવડાવેલું કે આ ઘરમાં લગાડજે, ₹ ૧૦૦નું આ પોસ્ટર છે. મારી સાથે જે હતા, એમણે મજાક કરી કે બ્હાર આ પોસ્ટર સસ્તું મળે છે. એટલે પ.પૂ. ગુરૂજીએ કહેવડાવેલું કે બ્હાર ભલે સસ્તું મળે, પણ આ જેવી વાત નહીં બને. પ.પૂ. દીદી પાસેથી લેશે, એની વાત જ જુદી છે.

એ પોસ્ટરમાં ભગવાન ને ભગતની વાત હતી. ભગત દરિયા કિનારે ચાલતો હોય છે, ત્યાં એને

ચાર પગલાં દેખાય છે ; બે પોતાના અને બે ભગવાનના. સુખના દિવસોમાં ભગવાન એની સાથે જ રહ્યા છે એનો એને એહસાસ થાય છે, પણ જયારે દુ:ખના દિવસો આવ્યા હોય છે ત્યારે એને બે જ પગલાં દેખાય છે. તેથી એ શોકમાં ડૂબી જાય છે ને ભગવાનને પૂછે છે કે સુખના દિવસોમાં તો તમે મારી સાથે હતાં અને દુ:ખના દિવસોમાં તમે મારો સાથ કેમ છોડી દીધો'તો ? ત્યારે ભગવાન જવાબ આપે છે કે –

તને જે બે પગલાં દેખાતા હતા એ મારા જ હતા. તારા એ દુ:ખના દિવસોમાં તો મેં તને ઊંચકી લીધેલો.

આ વાંચીને મારી હૈયું ભરાઈ આવ્યું.

એવી રીતે એકવાર પ.પૂ. ગુરૂજીએ સભામાં એક વચનામૃત વંચાવેલું. એમાં હતું કે ભગવાન આપણને દુ:ખમાં રાખે તો પણ ખુશ રહેવું. જ્યારે મુશ્કેલીનો ટાઈમ શરૂ થયો, ત્યારે નેગેટિવ વિચારો તો ઘણાં આવી ગયા. અચાનક જ્યોતિષના શબ્દો પણ યાદ આવવા લાગ્યા. વળી, પ.પૂ. દીદીએ જે પોસ્ટર આપેલું ને પ.પૂ. ગુરૂજીએ વચનામૃત વંચાવેલું – એની પાછળનો મર્મ સમજાવા લાગ્યો. જ્યોતિષે જે જે કહ્યું હતું એમાંની એક પણ વાતની તકલીફ પ.પૂ. ગુરૂજીએ નથી પડવા દીધી. મુશ્કેલીનો સમય શરૂ થયો એ પહેલાં તો સામેથી ભગવાન મળી ગયા. વગર કહે બધું જ સાચવી લીધું. મહારાજે રામાનંદસ્વામી પાસે જે બે વર માંગ્યા હતા, એ મારા જીવનમાં પ.પૂ.ગુરૂજીએ સાકાર કર્યા છે. આવા સમયમાં જ્યારે-જ્યારે દુ:ખી થતી, ત્યારે બળ મળી જતું. ક્યારેક સપનામાં આવીને પૂછતા કે *આપણને પ્રાપ્તિનો કેફ રહ્યો ?* તો ક્યારેક કહેતા કે *હું છું ને ! તું શું કામ ચિંતા કરે છે ?* એમની મૂર્તિનું સુખ એટલું મળ્યું કે બીજું બધું ગૌણ થઈ ગયું.

* મારા હસ્બન્ડને ઑફિસમાં ઘણા બધાં પ્રોબ્લમ્સ હતાં. ત્યારે એમને એટલો સત્સંગ ન્હોતો. હું એમને કહું કે તમે ગુરૂજીને વાત કરો, તો એ કહે કે ઑફિસના કામમાં ગુરૂજી શું કરશે ? મેં એમને કહ્યું કે દરેક પ્રોબ્લેમનું સોલ્યુશન પ.પૂ. ગુરૂજી છે. અંદરથી જ્યારે મને દર્શનની ઇચ્છા હોય ત્યારે ઘેર આવીને દર્શન આપી શકે છે, તો બીજું શું ન કરી શકે ? બીજા બધાં સત્સંગી પણ એમને પોતાના પ્રોબ્લૅમ્સ કહેતા હોય છે. એકવાર રાતના ૮:૩૦ વાગે જમતા-જમતા એમણે સંકલ્પ કર્યો કે દીપ્તી કહે છે કે તમે અંતર્યામી છો, ભગવાનનું સ્વરૂપ છો તો આજે મારે પણ તમારા દર્શન કરવા છે. પણ હું તમારી પાસે નહીં આવું. તમે જેમ અહીં આવી દીપ્તીને દર્શન આપો છો, તેમ–

❖ *મને પણ અહીં આવીને દર્શન આપો,*

❖ *હું તમને 'જય સ્વામિનારાયણ' કહું એ પહેલા તમે મને 'જય સ્વામિનારાયણ' કહો, અને*

❖ *મંદિર જતી વખતે તમે મને કહો કે 'સુનીલ, જય સ્વામિનારાયણ ! હવે તુ મંદિર ક્યારે આવીશ ?'*

આજના દિવસ તમે મને આટલું કહો તો હું તમને ભગવાનનું સ્વરૂપ માનીશ. બાકી તમને હું

જીંદગીભર નહીં માનું. અને... ૯:૩૦ વાગે તો પ.પૂ.ગુરૂજી ઍપાર્ટમૅન્ટ આવી ગયા! પ.ભ. કીર્તિભાઈના ઘરે આવ્યા હતા. જેવા અમે એન્ટર થયા કે પ.પૂ. ગુરૂજીએ સોફા પરથી ઊભા થઈને એમને કહ્યું– *સુનીલ, જય સ્વામિનારાયણ!* અડધો-પોણો કલાક બેઠા અને મંદિર જવા ગાડીમાં બેઠા અને એમને કહે કે *સુનીલ, જય સ્વામિનારાયણ! હવે તમે મંદિર ક્યારે આવશો ?* આમ એમનો જે સંકલ્પ હતો એટલી વાત એમની સાથે કરી. ત્યારથી એમને પ.પૂ. ગુરૂજી પ્રત્યે ભાવ થયો.

* એકવાર મારા હસ્બન્ડની તબિયત બહુ ખરાબ હતી. બે ડૉક્ટર બદલવા છતાં એમને તાવ ઊતરતો ન્હોતો. પૂ.રાકેશભાઈને ખબર પડી કે સુનીલભાઈની તબિયત ખરાબ છે અને તાવ ઊતરતો નથી; તો એમણે કહ્યું કે આજે સાંજે હુ વ્હેલો આવી જઈશ, આપણે ડૉ. ભાટિયા પાસે જઈશું. પૂ. રાકેશભાઈએ પ.પૂ. ગુરૂજીને વાત કરી કે આજે હું વ્હેલો ઘરે જઉં છું કેમ કે સુનીલભાઈને ડૉ. ભાટિયા પાસે લઈ જવાના છે. પ.પૂ. ગુરૂજીએ તરત ફોન કરાવ્યો કે કાલે સવારે હું સુનીલની તબિયત જોવા આવું છું. ડૉ. ભાટિયા પાસે ગયા, તો એમને જોઈને એમણે કીધું કે તમે હમણાં જ ઍડ્મીટ થઈ જાવ. તમને તો સિવીયર ચેસ્ટ ઇન્ફેક્શન છે. તમે થોડા મોડા આવ્યા હોત તો આ કેસ હાથમાં લેવાય એવો રહેત નહી. એમણે ડૉક્ટરને કહ્યું કે કાલે સવારે પ.પૂ. ગુરૂજી ઘરે આવવાના છે, એટલે હું આજે ઍડ્મીટ નહીં થઉં. કાલે જો પ.પૂ. ગુરૂજી મને ઍડ્મીટ થવા માટે કહેશે તો થઈ જઈશ. પણ મને વિશ્વાસ છે કે પ.પૂ. ગુરૂજી આવશે તો હું ઠીક થઈ જ જઈશ. ડૉ. ભાટિયા પ.પૂ. ગુરૂજીના ચેક-અપ માટે મંદિર આવતા અને એમને પણ પ.પૂ. ગુરૂજી માટે ભાવ હતો એટલે એ કંઈ વધારે બોલ્યા નહિ. થોડા ટેસ્ટ લખી આપ્યા અને બીજે દિવસે રિપોર્ટ બતાવવાનું કહ્યું. બીજે દિવસે સવારે પૂ. રાકેશભાઈ એમને ટેસ્ટ કરાવવા લઈ ગયા. ત્યાંના ડૉક્ટરે પણ કહ્યું કે તમે ઍડમીટ થઈ જાવ. તમને બિલ્કુલ સારું નથી. એ ટેસ્ટ કરાવીને આવ્યા અને થોડી વારમાં પ.પૂ. ગુરૂજી આવ્યા. પ.પૂ. ગુરૂજીએ નાસ્તો કર્યો અને બાથરૂમ ગયા. આવીને તરત એમને કહે કે સુનીલ, તમને કંઈ નથી. સાંજે તમારા રિપોર્ટમાં 'નીલ' લખાઈને આવશે. થોડીવાર બેઠા, ધૂન કરી. પછી પ.પૂ. ગુરૂજી મંદિરે જતા કહેતા ગયા કે સાંજે મંદિરે આવજો. આમ હિન્ટ આપી ગયા કે સારૂં થઈ જ જવાનું છે. પ.પૂ. ગુરૂજીના ગયા પછી એમને સારૂં થતું ગયું. ફ્રેશ ફીલ કરવા લાગ્યા. સાંજે અમે રિપોર્ટ લેવા ગયા ને ખોલીને જોયો તો એમાં સાચે જ 'નીલ' લખેલું હતું. ડૉક્ટર પણ રિર્પોટ જોઈને આશ્ચર્યમાં પડી ગયા ને કહે કે આ તો મિરૅકલ જ છે. હવે તમને કોઈ દવાની જરૂર નથી. ત્યાંથી અમે સીધા મંદિરે ગયા.

* પાંચ વર્ષ પહેલા મારા હસ્બન્ડનો ઍક્સીડન્ટ થયો હતો. એમણે પૂ. કૌશિકભાઈને ફોન કર્યો કે હું આ જગ્યાએ છું અને મારાથી ઊભા પણ નથી થવાતું. તો મને લેવા કોઈને મોકલો. પૂ. કૌશિકભાઈએ પ.પૂ. ગુરૂજીને વાત કરી ને તરત મંદિરેથી પૂ. પ્રભાકરભાઈને મોકલ્યા. મંદિરે આવ્યા ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીએ એમને કહ્યું કે આજે અહીંયા જ રહી જાવ, સવારે પ્રભાકરભાઈ

તમને ડૉક્ટર પાસે લઈ જશે. પણ, એમને ખૂબ જ પેઈન થતું હતું એટલે પ.પૂ. ગુરૂજીએ કહ્યું કે અત્યારે જ આમને ડૉક્ટર પાસે લઈ જાવ. રાતના ૧:૩૦ વાગે પૂ. પ્રભાકરભાઈ એમને લઈ ડૉક્ટર પાસે ગયા અને સવારે ૪:૦૦ વાગે પાછા આવ્યા; ત્યાં સુધી પ.પૂ. ગુરૂજી ને બધા જ જાગતા બેસી રહ્યા. બીજા દિવસે સવારે એમણે ઘરે જવાની વાત કરી તો પ.પૂ. ગુરૂજીએ ના પાડી ને કહ્યું કે તમારે અહીંયા જ રહેવાનું છે. થોડું સારૂ થાય પછી જજો. અમારૂં ઘર ત્રીજા માળે છે. એટલે પ.પૂ. ગુરૂજી કહે કે વારે વારે ડૉક્ટર પાસે જવાનું થાય ત્યારે બે-ત્રણ જણ ઊંચકીને નીચે ઉતારે અને પાછા ચઢાવે એના કરતા અંહી જ રહો. ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીએ મને પણ કહેવડાવેલું કે સુનીલ હમણાં અહીં જ રહેશે. જ્યારે જાતે ચાલતા થઈ જશે, પછી ઘરે આવશે. મંદિરમાં પૂ. સુહૃદ્સ્વામીને પ.પૂ. ગુરૂજીએ કહ્યું કે સુનીલને જે ટાઈમે જે લેવાનું હોય તે એમને આપી દેજો. એમને માંગવું ન પડે. પ.પૂ. ગુરૂજીએ એમને એક મહિના સુધી ત્યાં રાખ્યા. ડૉક્ટરની ઍપોઈન્ટમેન્ટ લેવાની, બતાવવા જવાનું, ઑપરેશન થયું – એના માટે જે જે દોડાભાગી કરવાની, બધું જ પૂ. પ્રભાકરભાઈ કરતા. અમારે પૂછવું પણ ન્હોતું પડતું કે ક્યારે કોને બતાવવા જવાનું છે કે ટેસ્ટ કરાવવા જવાનું છે. એ પહેલા જ બતાવી દેતા હતા. એવી જ રીતે મંદિરમાં સંતો-સેવકો એમનું ખૂબ જ ધ્યાન રાખતા. ટાઈમે ટાઈમે બધું જ એમની પાસે હાજર થઈ જતું. એમને સરગવાની સીંગનો સૂપ પીવાનો હતો, તો પૂ. દીક્ષા દીદી રોજ ટાઈમે સૂપ મોકલી જ દેતા. એમને જે શાક ભાવે તે પૂ. દીક્ષાદીદી બનાવીને મોકલતા. સંતો અને બહેનોએ એમનું એટલું બધું સાચવ્યું કે એવું તો હું ય ના સાચવી શકી હોત. કોઈનું રાખવાની-સાચવી લેવાની પ.પૂ. ગુરૂજીની રીતે-રીત જ મંદિરના દરેક મુક્તોએ ખૂબ ધ્યાન રાખ્યું છે.

મારા પર બધાં સગાવ્હાલાંના ફોન આવતા કે સુનીલને હવે કેમ છે ? તારે તો હવે નર્સની ડ્યુટી બજાવવી પડતી હશે. ત્યારે હું કહેતી કે મારે કંઈ જ કરવાનું નથી. એ મંદિરમાં છે અને એ બધાં જ ધ્યાન રાખે છે. આવું ક્યાંય જોયેલું કે સાંભળેલું નહીં, એટલે બધાંને ખૂબ આશ્ચર્ય પણ થતું. વળી, મંદિરના વાતાવરણમાં એ રહ્યા તો દુ:ખ પણ અડધું થઈ ગયું. એક મહિનો ક્યાં પસાર થઈ ગયો એની ખબર પણ પડી ન્હોતી. **પ.પૂ. ગુરૂજીના પરિશ્રમને અને એમની મહિમાને ખૂબ ખૂબ ધન્યવાદ છે.**

* કોઈ પણ વ્યક્તિ સ્કૂટર યા બાઈક ચલાવે તો દિલ્હીમાં પ.પૂ. ગુરૂજી આગ્રહ રાખે કે હેલ્મેટ વગર નહીં ચલાવવાનું. મને હેલ્મેટ પહેરવું ગમતું નહીં અને પહેરવાથી માથામાં દુ:ખાવો પણ થતો. એટલે જ્યારે હું મંદિર જાઉં ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીને મનોમન પ્રાર્થના કરીને નીકળતી કે હું હેલ્મેટ નહીં પહેરું, તમે મને પોલીસવાળાથી બચાવજો. ખબર હતી કે પ.પૂ. ગુરૂજીને આ નથી ગમતું, તો પણ હું વગર હેલ્મેટ પહેરે જ જતી. પાંચ વર્ષ સુધી આમ ચાલ્યું, એમણે બચાવી પણ લીધી. પ્રાર્થના કરીને નીકળતી, એટલે બધી રીતે એમણે રક્ષા કરી; પણ આ વસ્તુ ગલત છે, એ એમને સમજાવવું તો હતું જ. એટલે એક દિવસ પુનીત મલ્હોત્રાએ પ.પૂ. ગુરૂજીને આપવા માટે

મને એક ચિટ્ઠી સપનામાં આપી. એમાં લખ્યું હતું કે – *ગુરૂજી, આપને મુઝે કહા થા ન કિ દીપ્તીભાભી કો ચલાન ભેજ દેના, વો મૈંને ભેજ દિયા હૈ.* હું તો સપનામાં જ ડરી ગઈ હતી અને બીજા જ દિવસે સવારે ખરેખર ચલાન આવ્યું. એ જોઈને આશ્ચર્ય તો ના થયું , પણ સમજી ગઈ કે મારી રક્ષા માટે જ ચલાન મોકલ્યું છે. હેલ્મેટ વગર ચલાવવું રિસ્કી છે. ત્યાર પછી ક્યારેય હેલ્મેટ વગર જતી ન્હોતી.

આમ જાણી જાણીને કરેલી ઘણી ગલ્તીઓને એમણે માફ પણ કરી છે, નજરઅંદાજ પણ કરી છે. પ્રસંગે સમજાવીને આવી સૂઝ પણ આપી છે.

✻ મારા દિકરા સમીરને એનો પાસપોર્ટ બનાવવાનો હતો. એના વેરીફીકેશન માટે ઇન્સ્પેક્ટર ઘરે આવ્યા ત્યારે એના સર્ટિફિકેટ, લાઇસેન્સ – એકેયમાં એનું એક જેવું નામ ન્હોતું. બધાંમાં અલગ અલગ હતું. આવામાં તો એ પાસપોર્ટ બનવા માટે 'ઓ.કે' કરે જ નહિં. વળી, એણે અમને બીજા બધાંની વાત પણ કરી ને અમુક સંતોની વાત કરી કે મેં એ બધાનાં પાસપોર્ટ બનવા જ નથી દીધાં. પછી, ઘરમાં પ.પૂ. ગુરૂજીની મૂર્તિ જોઈને એણે પૂછયું કે આ કોણ છે ? અને તમને શું કરવાનું કહે છે ? એટલે મેં કહ્યું કે આ અમારાં ગુરૂજી છે અને **અમને કોઈપણ પ્રૉબ્લેમ આવે તો દર વખતે એ એમના ગુરૂને યાદ કરીને સિર્ફ ભજન કરવાનું કહે છે.** ફક્ત આટલી જ વાતમાં તો એ એટલો બધો ખુશ થઈ ગયો અને કહે કે તમારા ગુરૂ પોતાનું કંઈ કરવાનું નથી કહેતાં ? એ એમના ગુરૂને જ આગળ રાખે છે ? હવે તમે ચિંતા નહીં કરતા. તમારા ગુરૂ આવા સરસ છે, તો તમારૂં કામ તો હું ચોક્કસ કરી દઈશ અને દોઢ મહિનામાં તો પાસપોર્ટ બની પણ ગયો! આવા કંઈ કેટલાય અનુભવો પ.પૂ. ગુરૂજીએ કરાવ્યા છે...

– દીપ્તિ શાહ (ગુજરાત ઍપાર્ટમેન્ટ્સ, દિલ્હી)

[हिन्दी अनुवाद]

स्वामिश्रीजी

✻ **'जोगीडाने जोवा गया रे, जोनारा झड़पाणा.... ज्ञान गंगामां तणाणा'**

हमारे नीचे के फ्लोर पर एक सत्संगी बहनजी रहने आईं। पहले वे मंदिर के नज़दीक रहती थीं। प.पू. गुरुजी ने उन्हें (गुजरात) एपार्टमेन्ट में रहने के लिए भेजा था। उनसे कहलवाया था कि वे जिस ब्लॉक में रहने जाएंगी, उसमें किसी एक को जरूर दृढ़ सत्संग होगा। वो बहनजी जब बीमार हुईं, तब पड़ौसी के नाते एक सप्ताह मुझे उनकी सेवा करने का मौका मिला। उस दौरान वे मुझसे प.पू. गुरुजी की महिमा की बहुत बातें करतीं। शुरुआत में मुझे उनकी बातों में इन्ट्रेस्ट नहीं आता था। हम जैन हैं, उसका प्राइड ज्यादा था। लेकिन काफी महिमा और आनंद की बातें सुनीं, तो मन में आया कि क्यों न एक बार इनके गुरुजी को देखने तो जाएं कि वे कैसे हैं! पहली बार ही जब गुरुजी के दर्शन किए, तो थोड़ी देर बैठने के बाद आँख में से आँसू निकलने लगे। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि रोना क्यों आ रहा है। थोड़े दिन के बाद

प.पू. गुरुजी एक बार सभा में बोले कि **'जीव जब जगत से अलग होकर भगवान का होता है, तब साक्षी भेदा जाता है और तब कइयों को रोना आता है।'** यूँ, प.पू. गुरुजी को देखने आई थी, उसमें पकड़ में तो मैं ही आ गई! अब उनकी ज्ञानगंगा में सराबोर हो जाएं, अधूरे न रह जाएँ।

जब मैं सत्संग में आई तब मेरे घर में से अन्य किसी को भी सत्संग नहीं था, इसलिए मैं मंदिर कम जा पाती थी। लेकिन मेरा दर्शन करने का अंग, इसलिए दर्शन करने की खूब इच्छा रहती। जब-जब प.पू. गुरुजी के दर्शन की इच्छा होती, तब-तब किसी न किसी बहाने प.पू. गुरुजी अंतर्यामी रूप से एपार्टमेन्ट में आते और उनके दर्शन करके मेरा अंतर शांत हो जाता। यदि कुछ दिन प.पू. गुरुजी न आए हों या मैं दर्शन करने न जा सकी, तब अंदर बैचेनी होती और मन में ही प.पू. गुरुजी से कहती कि मैं दर्शन करने आपके पास नहीं आ सकती, मैं मजबूर हूँ; परंतु, आप मजबूर थोड़े ही हैं, आप तो यहाँ आइए। उसी दिन अंतर्यामी रूप से वे जरूर आते। मुझे उनके दर्शन होते ही शांति हो जाती थी। **अंतर की पुकार वे जरूर-जरूर सुनते ही हैं।**

✻ कर्युं कांई अमे नहीं सर्व ते कर्युं, संबंध स्थापी टकावी स्मित ते जाळव्युं...

बचपन में किसी ज्योतिषी ने कहा था कि विवाह के बाद इसके आठ वर्ष बहुत ही कठिन हैं। जैसे-तैसे वह समय निकल जाए, फिर बाद में सुख ही सुख है। मैं तो उस बात को भूल ही गई थी। एक बार प.पू. दीदी द्वारा प.पू. गुरुजी ने मुझे **'फुटप्रीन्ट्स इन धी सेन्ड'** वाला पोस्टर भेजा और कहलवाया कि यह घर में लगाना, ₹ १०० का यह पोस्टर है। मेरे साथ जो थे, उन्होंने मज़ाक किया कि बाहर यह पोस्टर सस्ता मिलता है। सो, प.पू. गुरुजी ने कहलवाया कि बाहर भले ही सस्ता मिलता है, लेकिन इसके जैसी बात नहीं होगी। प.पू. दीदी के हाथों से ले रही है, इसकी बात ही अलग है।

इस पोस्टर में भगवान और भक्त की बात थी। एक भक्त समुंदर के किनारे चल रहा था। वहाँ उसे चार पैर दिखाई देते हैं–दो अपने और दो भगवान के। सुख के दिनों में भगवान उसके साथ ही रहे हैं, इसका उसे एहसास होता है; लेकिन जब दुःख के दिन आते हैं तब उसे दो ही पैर दिखाई देते हैं। इससे वह शोक में डूब जाता है और भगवान से पूछता है कि सुख के दिनों में तो आप मेरे साथ थे और दुःख के दिनों में आपने मेरा साथ क्यों छोड़ दिया था। तब भगवान जवाब देते हैं –

तुझे जो दो पैर दिखाई दे रहे थे वे मेरे ही थे। तेरे उन दुःख के दिनों में तो मैंने तुझे उठा लिया था।

यह पढ़ कर मेरा दिल भर आया।

इसी प्रकार, एक बार प.पू. गुरुजी ने सभा में एक वचनामृत पढ़वाया। उसमें था कि भगवान हमें दुःख में रखें तो भी खुश रहना। जब मुश्किल समय शुरू हुआ, तब नेगेटिव विचार तो खूब आए। अचानक ज्योतिषी के शब्द भी याद आने लगे। तब, प.पू. दीदी ने जो पोस्टर दिया था और प.पू. गुरुजी द्वारा पढ़वाए गए वचनामृत के पीछे का मर्म समझ में आने लगा। ज्योतिषी ने जो-जो कहा था, उसमें से एक भी प्रकार की तकलीफ प.पू. गुरुजी ने होने नहीं दी। मुश्किल का समय शुरू हुआ, उससे पहले तो

भगवान सामने से मिल गए। बिना कहे ही सब कुछ संभाल लिया। महाराज ने रामानंदस्वामी से जो दो वर मांगे थे, वे मेरे जीवन में प.पू. गुरुजी ने साकार किए। ऐसे समय में जब-जब दुःखी होती, तभी बल मिल जाता। कभी तो सपने में आकर पूछते–*हमें प्राप्ति की मस्ती रही है?* तो कभी कहते– *मैं हूँ न! तू क्यों चिंता करती है?* उनकी मूर्ति का सुख इतना मिला कि अन्य सब कुछ गौण हो गया।

✻ मेरे हस्बन्ड को ऑफिस में कई प्रोब्लॅम्स थीं। तब उन्हें ज्यादा सत्संग नहीं था। मैं उनसे कहती कि तुम गुरुजी से बात करो, तो वे कहते कि ऑफिस के काम में गुरुजी क्या करेंगे। मैंने उन्हें कहा कि हर एक प्रोब्लॅम का सोल्युशन प.पू. गुरुजी हैं। अंदर से जब मुझे दर्शन करने की इच्छा होती है, तब घर आकर वे दर्शन दे सकते हैं, तो और कुछ क्या नहीं कर सकते। अन्य सभी सत्संगी भी उन्हें अपनी प्रोब्लॅम्स बताते हैं। एक बार रात को साढ़े आठ बजे भोजन करते हुए मेरे हस्बन्ड ने संकल्प किया कि दीप्ति कहती है कि गुरुजी आप अंतर्यामी हैं, भगवान के स्वरूप हैं तो आज मुझे भी आपके दर्शन करने हैं। लेकिन मैं आपके पास नहीं आऊँगा। जैसे आप यहाँ आकर दीप्ति को दर्शन देते हैं, वैसे ही–

❖ *मुझे यहीं आकर दर्शन दो,*

❖ *मैं आपको 'जय स्वामिनारायण' कहूँ, उससे पहले आप मुझसे 'जय स्वामिनारायण' कहो और*

❖ *मंदिर जाते समय आप मुझसे कहो कि 'सुनील, जय स्वामिनारायण! तुम मंदिर कब आओगे?'*

आज के दिन आप मुझे इतना कहोगे, तो मैं आपको भगवान का स्वरूप मानूँगा। वर्ना आपको मैं जिदंगीभर नहीं मानूँगा। और... ९:३० बजे तो प.पू. गुरुजी एपार्टमेन्ट में आ गए! प.भ. कीर्तिभाई के घर पर आए थे। जैसे ही हम एन्टर हुए कि प.पू. गुरुजी सोफे से उठ कर उन्हें बोले–सुनील, जय स्वामिनारायण! आधा-पौना घंटा बैठे और मंदिर जाने के लिए गाड़ी में बैठते हुए इनसे बोले–सुनील, जय स्वामिनारायण! अब तुम मंदिर कब आओगे? यूँ, उनके जो संकल्प थे उतनी ही बात उनके साथ की। तब से उन्हें प.पू. गुरुजी के प्रति भाव हो गया।

✻ एक बार मेरे हस्बन्ड की तबियत बहुत खराब थी। दो डॉक्टर बदलने के बाद भी उनका बुखार उतरता ही नहीं था। पू. राकेशभाई को पता चला कि सुनीलभाई की तबियत खराब है और बुखार उतरता ही नहीं; तो उन्होंने कहा कि आज शाम को मैं जल्दी आ जाऊँगा, हम डॉ. भाटिया के पास चले चलेंगे। पू. राकेशभाई ने प.पू. गुरुजी से कहा कि आज मैं जल्दी घर जा रहा हूँ क्योंकि सुनीलभाई को डॉ. भाटिया के पास ले जाना है। प.पू. गुरुजी ने तुरंत फोन करवाया कि कल सुबह मैं सुनील की तबियत देखने घर पर आ रहा हूँ। डॉ. भाटिया के पास गए, तो उन्होंने देख कर कहा कि तुम तुरंत ही एड्मिट हो जाओ। तुम्हें तो सिवीयर चेस्ट इन्फॅक्शन है। आने में तुमने देर कर दी होती, तो यह केस हाथ में नहीं लिया जा सकता था। मेरे हसबन्ड ने डॉक्टर से कहा कि कल सुबह प.पू. गुरुजी घर पर आने वाले हैं, सो मैं आज एड्मिट नहीं होऊँगा। कल यदि प.पू. गुरुजी मुझे एड्मिट होने के लिए कहेंगे तो हो जाऊँगा; लेकिन मुझे

विश्वास है कि प.पू. गुरुजी आएंगे तो मैं ठीक हो ही जाऊँगा। डॉ. भाटिया प.पू. गुरुजी के चेक-अप के लिए मंदिर आते रहते थे और उन्हें भी प.पू. गुरुजी के प्रति भाव था इसलिए ज्यादा कुछ बोले नहीं। थोड़े टेस्ट लिख कर दिए और दूसरे दिन रिपोर्ट दिखाने के लिए कहा। अगले दिन सुबह पू. राकेशभाई उन्हें टेस्ट करवाने के लिए ले गए। वहाँ के डॉक्टर ने भी कहा कि तुम एडि्मट हो जाओ, तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। टेस्ट करवा कर वे वापिस आए और थोड़ी ही देर में प.पू. गुरुजी आ गए। प.पू. गुरुजी ने नाश्ता किया और बाथरूम गए। बाहर आकर तुंरत उनसे बोले–सुनील, तुम्हें कुछ नहीं है। शाम को तुम्हारी रिपोर्ट में 'निल' लिख कर आएगा। थोड़ी देर बैठे, धुन की। मंदिर वापिस जाते हुए प.पू. गुरुजी कहते गए कि शाम को मंदिर आना। यूँ हिन्ट दे गए कि अच्छा हो ही जाना है। प.पू. गुरुजी के जाने के बाद वे ठीक होने लगे, फ्रेश फील करने लगे। शाम को हम रिपोर्ट लेने गए और खोल कर देखा तो उसमें सच में ही 'निल' लिखा था। डॉक्टर भी रिपोर्ट देख कर आश्चर्य में पड़ गए और बोले कि यह तो मिरॅकल ही है। अब तुम्हें किसी दवाई की जरूरत नहीं। वहाँ से हम सीधा मंदिर गए।

* पाँच वर्ष पहले मेरे हस्बन्ड का एक्सीडन्ट हुआ था। उन्होंने पू. कौशिकभाई को फोन किया कि मैं इस जगह पर हूँ और मुझ से खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा; मुझे लेने के लिए किसी को भेज दो। पू. कौशिकभाई ने प.पू. गुरुजी से बात की और तुरंत मंदिर से पू. प्रभाकरभाई को भेजा। मंदिर आए तो प.पू. गुरुजी ने उनसे कहा कि आज यहीं रुक जाओ, सुबह प्रभाकरभाई तुम्हें डॉक्टर के पास ले जाएंगे। लेकिन, उन्हें तेज दर्द हो रहा था, इसलिए प.पू. गुरुजी ने कहा कि अभी ही इन्हें डॉक्टर के पास ले जाओ। रात के डेढ़ बजे पू. प्रभाकरभाई उन्हें डॉक्टर के पास ले गए और सुबह चार बजे वापिस आए; तब तक प.पू. गुरुजी एवं सभी जगते ही रहे। अगले दिन उन्होंने घर जाने की बात की तो प.पू. गुरुजी ने मना किया और कहा कि तुम्हें यहीं रहना है। थोड़ा अच्छा हो जाए फिर जाना। हमारा घर तीसरी मंजिल पर है। सो, प.पू. गुरुजी ने कहा कि बार-बार डॉक्टर के पास जाना पड़ेगा, तब दो जनें तुम्हें उठा कर नीचे लाएँ और फिर वापिस चढ़ाएँ, इससे अच्छा है कि यहीं रहो। तब प.पू. गुरुजी ने मुझसे भी कहलवाया कि सुनील अब यहीं रहेगा। जब खुद चलने लगेगा, तब ही घर आएगा। मंदिर में पू. सुहृद्स्वामी से प.पू. गुरुजी ने कहा कि सुनील को जिस समय जो लेना हो, वह दे देना। उन्हें मांगना न पड़े। प.पू. गुरुजी ने उन्हें एक महीने तक मंदिर में रखा। डॉक्टर की एपॉईन्टमेन्ट लेनी, दिखाने जाना, ऑपरेशन हुआ–उसके लिए जो-जो दौड़ाभागी करनी, वह सब कुछ पू. प्रभाकरभाई करते। हमें पूछना ही नहीं पड़ता कि कब किसे दिखाने जाना है या टेस्ट करवाने जाना है। पहले ही वे कर देते थे। इसी प्रकार मंदिर के संत-सेवक उनका खूब ही ध्यान रखते। समय-समय पर सब कुछ उनके पास हाज़िर होता। उन्हें 'सरगवा की सींग' का सूप पीना होता था, तो पू. दीक्षा दीदी रोज समय से सूप भेज ही देतीं। उन्हें जो सब्जी पसंद हो, वो पू. दीक्षा दीदी बना कर भेज देतीं। संतों और बहनों ने उनका इतना ध्यान रखा कि ऐसा तो मैं भी नहीं रख पाती। किसी के रख-रखाव और संभालने की प.पू. गुरुजी की रीत से ही मंदिर के हर एक मुक्त ने खूब ध्यान रखा है।

मेरे सभी सगे-संबंधियों के फोन आते कि सुनील की तबियत अब कैसी है? तुझे तो अब नर्स की ड्यूटी करनी पड़ती होगी। तब मैं कहती कि मुझे तो कुछ भी नहीं करना पड़ता। वे मंदिर में हैं और वहाँ सभी उनका ध्यान रखते हैं। ऐसा कहीं देखा या सुना नहीं, इसलिए सभी को आश्चर्य भी होता। यूँ, मंदिर के माहौल में वे रहे तो दुःख भी आधा हो गया। एक महीना कहाँ निकल गया, उसका ख्याल ही नहीं पड़ा। **प.पू. गुरुजी के परिश्रम और उनकी महिमा को खूब-खूब धन्यवाद है।**

* कोई भी व्यक्ति स्कूटर या बाईक चलाए तो दिल्ली में प.पू. गुरुजी आग्रह रखते हैं कि बिना हेल्मेट के नहीं चलाना। मुझे हेल्मेट पहनना जँचता नहीं और पहनने से सिर में दर्द भी होता था। इसलिए जब मैं मंदिर आती, तब प.पू. गुरुजी से मनोमन प्रार्थना करके निकलती कि मैं हेल्मेट नहीं पहनूँगी, आप मुझे पुलिस वाले से बचाना। मालूम था कि प.पू. गुरुजी को यह जँचता नहीं, लेकिन फिर भी मैं बिना हेल्मेट पहने ही जाती। पाँच वर्ष तक ऐसा चला, उन्होंने बचा भी लिया। प्रार्थना करके निकलती थी, इसलिए सभी प्रकार से रक्षा की; लेकिन यह बात गलत है, यह तो उन्हें मुझे समझाना था ही। सो, एक दिन (सेवक) पुनीत मल्होत्रा ने प.पू. गुरुजी द्वारा मेरे लिए दी गई चिट्ठी सपने में दी। उसमें लिखा था कि– *गुरुजी, आपने मुझसे कहा था न कि दीप्तिभाभी को चालान भेज देना, वो मैंने भेज दिया है।* मैं तो सपने में ही डर गई थी और अगले ही दिन सुबह तो सच में चालान आया। वह देख कर आश्चर्य तो नहीं हुआ, लेकिन समझ गई कि मेरी रक्षा के लिए चालान भेजा है। हेल्मेट के बिना चलाना रिस्की है। उसके बाद कभी भी बिना हेल्मेट के जाती ही नहीं।

यूँ, जानबूझ कर की गई गल्तियों को उन्होंने माफ़ भी किया है, नज़रअंदाज़ भी किया है; प्रसंग पर समझा कर ऐसी सूझ भी दी है।

* मेरे बेटे समीर को पासपोर्ट बनवाना था। उसकी वेरीफीकेशन के लिए इन्सपेक्टर घर आया, तो समीर के सर्टिफिकेट, लाइसेन्स–किसी में भी उसका एक जैसा नाम नहीं था। सभी में अलग-अलग था। ऐसे में तो पासपोर्ट बनाने के लिए 'ओ.के.' कर ही नहीं सकते। फिर, उसने हमें अन्य कइयों की बात की और कई संतों की बात की कि मैंने उन सभी के पासपोर्ट बनने ही नहीं दिए। फिर घर में प.पू. गुरुजी की मूर्ति देख कर उसने पूछा कि ये कौन हैं और तुम्हें क्या करने के लिए कहते हैं। सो, मैंने कहा कि ये हमारे गुरुजी हैं और **हमें कोई भी प्रॉब्लेम आती है, तो हर बार वे अपने गुरु को याद करके सिर्फ भजन करने के लिए कहते हैं।** सिर्फ इतनी ही बात से तो वह इतना खुश हो गया और पूछा कि तुम्हारे गुरु अपने लिए कुछ करने के लिए नहीं कहते। वे अपने गुरु को ही आगे रखते हैं। अब तुम चिंता नहीं करना। तुम्हारे गुरु इतने अच्छे हैं, तो तुम्हारा काम तो मैं जरूर कर ही दूँगा और डेढ़ महीने में तो पासपोर्ट बन भी गया! ऐसे कई कितने अनुभव प.पू. गुरुजी ने करवाए हैं...

– दीप्ति शाह (गुजरात एपार्टमेन्ट्स, दिल्ली)

✡✡✡

स्वामिश्रीजी

सौरभ - २४

प.पू. काकाजी को शत्-शत् वंदन और खूब-खूब धन्यवाद, जो अपने सृजन, प.पू. गुरुजी के रोम-रोम में बसे हैं। हम सब भक्तों को तो कभी भी प.पू. काकाजी के स्थूल रूप से न होने का एहसास होता ही नहीं। हम में से तो कइयों ने उनके दर्शन भी नहीं किए होंगे, फिर भी यही एहसास होता है कि वे मौजूद हैं, क्योंकि प.पू. गुरुजी के किसी भी जेस्चर या क्रिया में प.पू. काकाजी शामिल न हों, यह तो हमने कभी देखा ही नहीं। प.पू. काकाजी के होते हुए सभी भक्त प्रभुता का जो एहसास करते थे, वही एहसास हम सबको प.पू. गुरुजी करवाते रहते हैं। गुरु के प्रति वफादारी कैसे रखनी, गुरु के प्रति पूरा जीवन समर्पित कैसे हो, इसका दर्शन तो हम सभी हर पल करते ही रहते हैं – प.पू. गुरुजी को अपने गुरु प.पू. काकाजी के प्रति और प.पू. दीदी को प.पू. गुरुजी के प्रति समर्पित देख कर। आज प्रभु के चरणों में प्रार्थना भी करनी है कि हे काकाजी, इस वफादारी का कुछ अंश तो हम में भी आए।

इतनी ऊँची कक्षा पर होते हुए भी प.पू. गुरुजी हमेशा दासत्वभाव से जीते हैं और हम सब से भी उनकी यही अपेक्षा रहती है कि हम भक्तों के ऐसे दास बन जाएं, जिससे भगवान हमारे वश हो जाएंगे।

प.पू. गुरुजी के अंतर्यामी होने के तो कई अनुभव हुए हैं और आज भी होते हैं। **जैसे ही अंतर से पुकार करो, तो तुरंत ही रिफ्लेक्शन मिल ही जाता है। यदि उनके कहे मुताबिक कोई बहुत ही छोटा-सा ही काम किया हो या उनके सिद्धांत को पकड़ कर थोड़ा-सा चलने की कोशिश भी की हो, तो तुरंत ही प्रसन्नता बता कर आगे बढ़ने का जोश भर देते हैं। हमारी चेतना की प्रगति के लिए, चाहे वे खुद कितने ही बुरे दिखाई भी पड़ते हैं, तो भी कभी चूकते नहीं; हमेशा प्रकाश फैंका ही करते हैं।** फिर यह हम पर है कि हम उस बात को कैसे लें और आगे बढ़ें। उनका उद्यम बस इसी हेतु होता है कि कैसे हम भगवान में जुड़े रहें और कैसे हमारी प्रगति होती रहे।

मेरा खुद का नेचर तो खूब ही रजोगुणी-सोशियल सर्कल में भी खूब आना-जाना, किट्टी पार्टी, हर अच्छी चीजों को पहनना-करना, खूब ही शौकीन मिज़ाज! मगर वो सारा नेचर कब यहाँ स्वीचओवर हो गया, पता ही नहीं चला। प.पू. गुरुजी खूब ही परिश्रम लेकर एक-एक नेचर को प्रभु के रास्ते पर स्वीचओवर करते गए। आज सब कुछ याद करने बैठती हूँ, तो रोंगटे खड़े होने लगते हैं, आँखों में आसूँ आने लगते हैं। चेतना की प्रगति के लिए इतना परिश्रम! तो, हे प्रभु! आप जो भी करवाना चाहते हैं, उसकी तैयारी तो अब रखें।

प.पू. गुरुजी ने व्यावहारिक स्तर पर भी खूब ही जतन किया है। जब विचार करती हूँ तो लगता है कि सब कुछ पलट कर रख दिया है। शायद कुछ भी आसान नहीं था। पर, सब कुछ सहज ही दे दिया। चौदह साल पहले हमारे पास फ्लॅट नहीं था। प.पू. गुरुजी मेरे पति पू. अनुजजी के साथ गाड़ी में किसी भक्त के यहाँ जा रहे थे। पू. अनुजजी ड्राईविंग सीट पर थे और प.पू. गुरुजी साथ में बैठे थे। पीतमपुरा में हमने एक फ्लॅट देख

रखा था जिसके बारे में हमने प.पू. गुरुजी को बताया था। पर फंड्स का एरेन्जमेन्ट नहीं था। तभी अचानक ही प.पू. गुरुजी ने पूछा कि वो फ्लॅट कहाँ है ? तो पू. अनुजजी ने दूर से ही दिखाया। थोड़ी देर प.पू. गुरुजी ने दृष्टि की और... दो ही दिन में फंड्स का एरेन्जमेन्ट हो जाना, फ्लॅट मिल जाना और हमारे नाम पर हो जाना – यह सब नामुमकिन कार्य मुमकिन हो जाना एक चमत्कार जैसा ही था।

एक प्रसंग और– जिसे मैं कभी भूल नहीं सकती। मेरे बेटे रूपित के जन्म के समय मुझे सीरियस प्रॉब्लम हो गई थी। अंतर से खूब पुकार की थी। तब प.पू. गुरुजी ने प.पू. दीदी द्वारा अस्पताल में अंगूर का प्रसाद मेरे लिए भिजवाया था। प.पू. दीदी ने अंगूर का प्रसाद मुझे खिलाया और अगले ही दिन मेरी प्रॉब्लम खत्म हो जाना, किसी चमत्कार से कम नहीं था।

हम सुनते हैं कि प.पू. काकाजी कहा करते थे कि **नॉर्थ में मुक्तों ने देह धरा है।** प.पू. गुरुजी तो पल-पल इन मुक्तों की रक्षा करने के लिए तैयार ही रहते हैं। मुक्तों का अहित तो वे होने ही नहीं देंगे। आज रूपित का प.पू. गुरुजी के प्रति लगाव देखती हूँ तो महसूस होता है कि उनके साथ रूपित का पुराना कुछ संबंध है ही।

फिर मेरी बेटी श्रेया का जन्म आठवें महीने में हो जाना तो असंभव जैसा ही था। डॉ. नरेश सहगल तक हैरान हो गए थे और उन्होंने साफ कह दिया था कि एक को ही बचा पाएंगे। उस वक्त मेरे पेट में जोर का दर्द उठा था और मुझे लग रहा था कि इस बार मैं बच ही नहीं सकती। अंतर से पुकार करने लगी थी कि हे गुरुजी, आप ही संभालो। थोड़ी देर में मुझे थोड़ा ठीक लगने लगा। मुझे ऑपरेशन थियेटर में ले गए। अचानक ही अंदर से खूब बल मिलने लगा और मैं हँसते-हँसते अंदर चली गई। वहाँ खड़ी सभी भाभियाँ हैरान रह गईं और डॉ. नरेश सहगल स्वयं कहने लगीं कि उन्हें प.पू. गुरुजी साक्षात् सामने खड़े दिखाई दे रहे थे। श्रेया का वज़न केवल २.५ किलो ही था, जो कि बच्चे को बचाने के लिए काफी कम था। वह जितने दिन अस्पताल में रही, तब तक प.पू. गुरुजी उसे ₹ ७५,००० कहते हुए मानो जीवनदान दे रहे थे। बारी-बारी से सभी भक्तों को अस्पताल भेजते, क्योंकि **भक्तों में तो खूब ताक़त होती है** और वे वहां भजन करते रहते थे। पूरे सत्रह दिन के बाद बिल्कुल ठीक-ठाक होकर वह घर पर आ गई। थोड़े ही दिन में बिल्कुल हेल्धी भी हो गई। उसे देख कर कोई कह नहीं सकता था कि यह 'प्री-मॅच्योर' है।

प.पू. गुरुजी ने पल-पल हमारी खूब ही रक्षा की है। जिस चीज के शायद हम अधिकारी थे ही नहीं, वह सब कुछ भी दिया है! भौतिक, व्यावहारिक और आध्यात्मिक – सभी तरह से प्रगति ही करवाई है। भजन की यह पंक्ति अकसर याद आती है –

'पल-पल मेरे चैतन्य का जतन किया तुमने... कमाल है गुरुजी आए मेरे जीवन में...'

तो थँक यू फॉर एवरीथिंग गुरुजी।

– अनिता दुरेजा, दिल्ली

✡✡✡

गुरुपूर्णिमा के अवसर पर कृपावर्षा...

आज गुरुपूर्णिमा – गुरुपूजन का दिन और गुरु के पास से आशीर्वाद लेने का दिन। मैंने पहले भी कई बार कहा है – आशीर्वाद देना यानि – सिर पर हाथ रखना, वो भगवान का काम है। अर्थात् – ऐसी विभूति जिन्होंने भगवान अखंड रखे हुए हों – जैसे काकाजी, पप्पाजी थे और स्वामिजी हैं, उन लोगों की बात है।

हम सब का एक ही कर्तव्य है कि हम गुरुपूजन **सच्चे अर्थ में** करें। जनरली हर एक जगह – **'गुरु मळया गुणवंता'** करके रोली या चंदन का तिलक लगाकर हर एक अपने गुरु का पूजन करेगा। **काकाजी** एक सेन्टेन्स हमेशा बोला करते थे– **'बाह्य पूजा छोड़ो, अंतर पूजा करो।'** तिलक चांदला लगाकर पूजा करनी – यह सारी बाह्य पूजा है, हार पहनाना बाह्य पूजा है। अंतर पूजा का अर्थ वचनामृत में बताया है। वड़ताल प्रकरण २ में महाराज ने खूब स्पष्ट रूप से यह बात कही है –

जिसने भगवान को सदा साकार माना और पल-पल के अपने जीवन के प्रसंगों में उन्हें ही कर्ता-हर्ता माना, उसने 'संपूर्ण पूजा' की।

शब्द लिखा है कि उसने 'संपूर्ण पूजा' की। बाकी चंदन, पुष्प, हार वगैरह से जो पूजा करें, पर यदि प्रगट प्रभु को जीवन में बसा कर उन्हें कर्ता-हर्ता नहीं माना, तो उस पूजा का कोई अर्थ नहीं है। हम प्रगट के उपासक हैं-गुरु में श्रद्धा रखते हैं; खूब भीतर में टटोलेंगे तो ख्याल आएगा कि हमारे और गुरु के बीच में एक तकरार चलती रहती है। हम चाहते हैं कि कोई भी प्रॉब्लम हो, वो हमारे ढंग से सॉल्व करो, प्रभु चाहते हैं – नहीं, मुझे मेरे ढंग से सॉल्व करने दो। **पप्पाजी** बोलते थे– ***'स्टॉप यॉर एंजिन, लेट हिम वर्क।'***

काकाजी इसे अलग ढंग से कहते थे –

'माहौल, परिस्थिति या हक़ीक़त को गिने बिना, अपनी निष्ठा के बलबूते पर कदम उठाओ।'

हम हमेशा माहौल देखकर ही चलते हैं। नहीं, हम प्रभु की निष्ठा पर चलें; कुछ बिगड़ नहीं जाएगा, वेईट तो करें। लेकिन हम में वह धीरज ही नहीं; क्योंकि हम चाहते हैं कि भगवान कुछ कर दें, उससे पहले मैं जो चाहूं वैसा कर लूं। जो सच में इन्ट्रोस्पेक्ट करता होगा, उसे यह बात ख्याल आएगी कि हम कर तो यही जाते हैं, क्योंकि असल में हमें संत का भरोसा ही नहीं है कि **संत हमेशा जो कुछ भी करेंगे, वो हमारी फेवर में ही करेंगे। उन्हें कभी अपना-पराया नहीं होता।**

उनकी शरण में जो जिस भाव से गया, उन्हें भजा, उसकी फेवर में क्या है उस ओर उनका एप्रोच रहेगा। राणा साहेब ने द्रोणाचार्य की बात बहुत अच्छी की। यह प्रसंग मैंने एक बार पहले भी समझाया था। ऊपर से देखो तो लगेगा कि द्रोणाचार्य ने अर्जुन से पक्षपात करने के लिए एकलव्य से गुरुदक्षिणा में अंगूठा मांग लिया। जब अंगूठा कट गया, तो फिर एकलव्य के लिए बाणविद्या की तो पूर्णाहूति ही हो गई और सर्वश्रेष्ठ धर्नुधारी अर्जुन ही बन गया। कॉमन लेवल पर और प्राकृत बुद्धि से एक गुरु के लिए ऐसा करना गलत है-सही नहीं है।

लेकिन इसके परे भी ऋतंभरा प्रज्ञा है। हम बोलते हैं और शास्त्र का ज्ञान भी झाड़ते हैं कि ऋतंभरा प्रज्ञा से भर देने वाले संत मिले हैं। पर उसके मुताबिक चलने के बजाय हम कहते हैं कि महाराज मेरा काम आप इस तरह कर दो न! क्योंकि हम जानते भी हैं कि कर तो ये ही पाएंगे, हमारे प्रयत्न से या बल से तो होने वाला नहीं

है। फिर, भगवान भी दयालु हैं कि–चलो नेक्स्ट टाईम, अभी तुम्हारे ढंग से कर देते हैं। लेकिन, उससे हम टाईम बिगाड़ते हैं। असल में तो हम अपनी मनमानी-अपने तरीके से हल करवाने का आग्रह छोड़कर, उनके तरीके से चलने देंगे, तो **हमने जो सोचा होगा, उससे कई गुना अच्छा और कई गुना ग्रेइसफुल होगा। लेकिन** हम यह मानने को तैयार नहीं होते, क्योंकि **हमारी बुद्धि छोटी है-शापित है।**

द्रोणाचार्य ने एकलव्य को पढ़ाने के लिए मना कर दिया था और कह दिया था–भई, तुम क्षुद्र जाति हो और मैं तो राजगुरु हूँ, मैं तुम्हें नहीं पढ़ाऊंगा–और न ही पढ़ाया। लेकिन एकलव्य ने उन्हें सर्वज्ञ, अन्तर्यामी मानकर उनकी मूर्ति बनाकर ज्ञान प्राप्त किया। द्रोणाचार्य ने देखा कि इसने मुझे खाली छः फुट की मूर्ति में सीमित न मानकर, अन्तर्यामी मानकर सेवन किया और बाणविद्या तो पाई; पर अब उसे एक गरूर रहेगा–इसकी इगो तो और बढ़ेगी कि–'मैं सर्वश्रेष्ठ बाणावर'। द्रोणाचार्य को उसकी कितनी फेवर होगी कि इसने जब सर्वज्ञ, अन्तर्यामी, व्यापक मानकर मेरा सेवन किया है, तो मैं भी इसकी चेतना की रक्षा करुँ; उसे 'अहम्' की इस क्षुद्र वृत्ति में न झूलने दूँ कि मैं तो अपने युग का सर्वश्रेष्ठ बाणावर हूँ।

किसी से क्लेश होता हो न तो हम भी समझते तो हैं कि हमारा 'अहम्' टकरा रहा है और सामने वाला व्यक्ति भी 'अहम्' छोड़ने को तैयार नहीं है। और... तब **हम मन में सोचते भी हैं कि अगर उसका 'अहम्' है, तो मेरा भी 'अहम्' है, मैं अब की नहीं झुकूँगा।** पर इसके बजाय **'अहम्' छोड़कर हम खूब अधिक बड़प्पन को पा लें उसमें अकलमंदी है।** आज हम एक व्यक्ति के पास अहम् नहीं छोड़ कर अपनी जीत कर भी लेंगे; लेकिन अहम् तो अंदर रहेगा न? और हरेक को परेशानी तो वही देता है। फिर महाराज कहेंगे, चलो दूसरा व्यक्ति ला दूंगा। वहाँ हमें टकराकर हमारे 'अहम्' को तो महाराज चूर-चूर करने वाले ही हैं। तो क्यों न हम अभी छोड़कर सुखी हो जाएँ?

द्रोणाचार्य का यह प्रसंग साफ बताता है कि संतों के लिए एक कोड ऑफ कन्डक्ट है कि वो सेवक का हित ही कर सकते हैं–वे हितकारी स्वरूप हैं। ऊपर से दिखाई पड़ेगा कि द्रोणाचार्य ने अर्जुन से पक्षपात किया और एकलव्य को कन्डेम किया। पर नहीं, असल में तो एकलव्य की खूब फेवर की। उसे अहम् में झूलने नहीं दिया और आगे ले लिया।

हमें जब ऐसे सच्चे संत मिले हुए हों, तो अकलमंदी यही है कि हम अपनी ये पूर्णाहूति करवा लें। इसलिए **काकाजी-पप्पाजी बोलते – गुणातीत भावना वाले साधु बनो, जिससे कि प्रभु हमारे अंदर अखंड निवास करके ही रहें।** और बातें बनें या नहीं बनें–कोई हर्जा नहीं।

हमें सिक्स्टी-सिक्स में संस्था ने दूर किया, तब मुंबई से **काकाजी** का एक ही मॅसेज आया करता था कि–
अब कोई प्रवृत्ति है नहीं। एक छोटे मंदिर में सभी इकट्ठे होकर रहते हो और एक साल तक तो हमें किसी से धर्मादा मांगने के लिए जाना नहीं है।
क्योंकि कोई देने वाला भी नहीं था। उस समय संस्था का प्रचंड विरोध था कि इनको कुछ दिया न जाए।
सो मैं सब सॅटिंग करके रखता हूँ। एक साल तक कहीं जाना नहीं, कुछ मांगना नहीं, कुछ करना नहीं, ***मूर्ति सिद्ध कर लो।***

यूँ उस समय सोखड़ा मंदिर में हमें खूब भजन करवाया। सच्चे संत की यह चाह होती है कि हमारे जीवन में प्रभु को पूर्ण रूप से भर दें, जिससे कि फिर और किसी चीज की हमें अपेक्षा रहे ही नहीं।

तो ऐसा सच्चा गुरु-पूजन आज हम कर लें। प्रभु सदा साकार हैं का मतलब– **'प्रभु ! मैं हमेशा यही समझूं कि मैं निराकार और तू साकार।' मतलब मेरी नहीं, तेरी ही चलने वाली है।** हमारी प्रभु के साथ तकरार यही है कि मेरी चलने दो। मैं चाहता हूँ वैसा क्यों नहीं करने– होने देते ? असल में सूक्ष्म रूप से देखें तो हमारा अहम् प्रभु से ही टकराता है, उसे छोड़ें।

दूसरी बात– **यह खूब समझ कर रखें कि पल-पल के कर्ता वे ही हैं, सामने वाला व्यक्ति नहीं है।** घर में मानो मियाँ-बीबी के बीच भी क्लेश है। तब पत्नी क्यों देखें कि वो हसबण्ड बोल रहा है। कई बार संत जान-बूझ कर ऐसे कई जेस्चर्स करते हैं, तब तो सब खुश होकर जाते हैं कि आज स्वामी ने हमारे मन को छेड़ा। तो, घर में जब हसबण्ड या कोई और मचेड़ता है, तब भी यही मानें न ! पर, तब नहीं मान पाएंगे, क्योंकि हमें कुत्ते की तरह जीवन जीने की आदत ही लगी हुई है। हमें कोई मुँह पर कह दे कि तू कुत्ता है, तो कितना बुरा लगता है ? **हम चाहेंगे कि हमें सब मानें शेर, लेकिन जीएंगे हम कुत्ते की तरह।** कुत्ते और शेर का फर्क तो आपको पता है कि **कुत्ते को कोई भी डंडा मारेगा, तो वह डंडे को- लकड़ी को काटेगा और शेर को अगर डंडे से कोई छेड़ने जाएगा, तो वह डंडा देखेगा तक नहीं; डंडा जिसके पास है उसे छलांग मारकर पकड़ेगा और उसे मारेगा।** तो, जब हम मानते हैं कि हमारे जीवन के पल-पल के कर्ता-हर्ता प्रभु हैं और वे मानो हमें बार-बार परेशान कर जाते हैं; तो उन्हें ही क्यों न पकड़ें ? जिसके माध्यम-डंडे से हमें वे परेशान कर रहे हैं, उसे काटने के बजाय प्रभु को ही काटें। लेकिन, प्रभु को काटने का तरीका अलग होता है। वो काटने का तरीका यहाँ नंदाजी का फोटोग्राफ देखा, तो याद आया।

जब हमें संस्था ने अलग किया गया, तो नंदाजी वॉज़ मच कन्सर्न्ड। उन्हें लगा कि यह क्या हो गया ? तब ऐसा लगता था कि संस्था के दो हिस्से हो गए हैं। पर, **काकाजी– पप्पाजी जानते थे कि योगीजी महाराज ने यह एक 'एलीवेटेड ग्रुप' अलग किया है,** जहाँ स्पिरिच्युअल टेक्नीशयन्स मॅन्यूफॅक्चर हों। वो बापा का उद्देश्य था। आम लेवल पर तो यह समझना बहुत मुश्किल था। तो, नंदाजी बड़े दुःखी जैसे थे। उन्होंने अपने एक प्रवचन में यह भी कहा था कि मुझे एक बार तो ऐसा महसूस हुआ था कि ये योगीजी महाराज ने शास्त्रीजी महाराज की संस्था का क्या कर दिया ? सो, उन्होंने शर्माजी और काकाजी को खास दिल्ली बुलाया कि उन्हें बताएँ कि क्या घटना घटी है, क्या बात है और किस लिए ये हुआ ? तब वे होम मिनिस्टर थे। सारे गवर्नर्स की मिटिंग रखी हुई थी, पर वह मिटिंग कॅन्सल करके वे काकाजी और शर्माजी के साथ बैठे। आपस में सारी बातचीत हुई। शर्माजी का नंदाजी के साथ दोस्ती का संबंध था। उन्होंने कहा–

लालाजी दो-तीन जनों की ही झंझट है, बाकी इसमें कुछ है ही नहीं। एक्च्युअली पर्सनालिटी कल्ट के कारण ये है; पर, बहनों की आड़ लेकर बैठ गए हैं। अगर आप चाहते हो कि यह बात फट् निपट जाए, तो डी.आई.आर. रूल के अंतर्गत इन दो-तीन जनों को अंदर करवा दो। छः महीने तो किसी को रीजन पूछना ही नहीं है कि क्यों अंदर किया।

नंदाजी एक मिनट तक सोचते रहे। एक मिनट के बाद कहते हैं – *दादुभाई कहते हैं, तो करते हैं।* नंदाजी तो सत्त्वगुणी थे। वे ऐसा गलत काम कभी नहीं करते, पर उन्होंने यह कहा – दादुभाई कहते हैं, तो करते हैं, यदि ऐसे मामला निपट जाता है। **काकाजी** ने उस समय फट् कह दिया –

लालाजी ! हमारी लड़ाई भगवान के साथ है और उनके साथ लड़ने के लिए हमारे साधन भी शुद्ध होने चाहिएँ। *हमें ऐसा नहीं करना।*

हम तो उस समय हाज़िर नहीं थे, लेकिन मैंने यह बात सुनी थी। मेरा एक डाउटिंग माइन्ड है; तो मैं यह मानने को तैयार हो गया कि काकाजी ने तो ऐसा जरूर कहा होगा – 'अपने साधन शुद्ध होने चाहिए।' लेकिन नंदाजी यह बात करें कि काकाजी कहें तो अंदर करवा दूँ, वो बात मेरे दिमाग़ में बैठती नहीं थी। बड़ों की बात थी, तो उस समय तो कुछ बोला-करा नहीं। फिर जब हमारा सिक्स्टी नाईन से दिल्ली आना-जाना हुआ, तो नंदाजी अकसर आते थे, क्योंकि साधु समाज में उनके ज़रिए ही तो हम ठहरे थे। एक दिन कुछ टाईम लेकर आराम से वे बैठे थे और मुझे मौका मिल गया। मैंने उनसे पूछा कि साहेब ! क्या यह बात सही है कि आपने ऐसा कहा था कि दादुभाई कह दें, तो कर देते हैं। वे बोले – कहा तो था। मैंने कहा कि आप तो ऐसे करो, ऐसे हो नहीं। आपने ऐसे कैसे कह दिया कि अगर काकाजी कह दें तो...। वे हंस पड़े और बोले कि **मुझे दादुभाई का भरोसा है, वो ऐसा करने के लिए कभी कहेंगे नहीं।** पर चन्द्रभानजी पीछे लगे हुए थे, सो मैंने कह दिया और दूसरा कि **मुझे शास्त्रीजी महाराज ने कहा था – दादुभाई का पक्ष रखना** और यही तो मौका होता है। ओहो! नंदाजी भी शास्त्रीजी महाराज का इतना छोटा-सा वचन लेकर कैसे चल पड़े!

तो, हम यही बात कर रहे थे कि –

मनमाने ढंग से करने के लिए प्रभु के साथ हमारी लड़ाई होती भी हो, लेकिन उसके लिए साधन भी भजन का लें। शेर की भाँति प्रभु को काटने का तरीका यह है कि **हमेशा तीव्र भजन करें।** इसीलिए तो कोई अपनी समस्या लेकर आता है, तो मैं हमेशा कहता हूँ कि भजन करो, हम भी तुम्हारे लिए भजन करेंगे।

गुरुपूर्णिमा के दिन और कोई नई चीज यहाँ से आपको लेकर नहीं जानी। प्रभु हमें मानव स्वरूप में मिले, जिन्हें सब ढूंढते हैं। काकाजी बोलते थे न कि **जहाँ दूसरे योगों की पूर्णाहूति है, वहाँ से हमारा योग शुरू होता है,** क्योंकि इतनी योग साधना करके उन्हें तो प्रभु पाने हैं। फिफ्टीज में श्री अरविन्दो के न्यूज़ आते थे कि आज श्री अरविन्दो को जेल में विष्णुजी के दर्शन हुए... वे जमीन से एक फीट ऊपर रहे। मैं तब बारह-तेरह साल का था और अखबार में यह पढ़ता था। वो प्रभु तो मानव स्वरूप में-जोगी महाराज के रूप में-काकाजी के रूप में हमने देखे, इतना ही नहीं – उनके साथ जीवन जिया! अब तो वे किसी भी तरह प्रसन्न हो जाएं और अपना काम हो जाए इतना ही करना है। यही एक साधना करते रहें कि किसी भी तरह हम मियाँ के चाँद से चाँद रखें। हम बोलते हैं, लेकिन मानते नहीं हैं। ये बात कहने में बड़ी आसान लगती है। बीरबल और अकबर वाली बात पर हम कहते हैं न कि ऐसे सड़े हुए बैंगन को कैसे कहेंगे कि अच्छे हैं। लेकिन नहीं, भई हम तो प्रभु के हैं। तो ये सच्चाई समझें कि **प्रभु परम सत्यस्वरूप हैं; बाकी सभी सत्य रीलेटीव हैं।**

आज किसी ने मुझसे कहा कि ये दोनों (प.भ. मिलनभाई-प.भ. आशिष) को हार पहनाओ। मेरा मन

भी यही था, क्योंकि जब हॉल की शुरुआत हुई, तब एक टीम तैयार की गई। उस समय मैंने नहीं सोचा था कि एक साल लगेगा। मुझे तो ऐसा था कि छः-आठ-नौ महीने में कम्पलीट हो जाएगा। आशिष के साथ मिलन यहाँ रहेगा और काम करेगा। तब, मैंने इन दोनों को बिठाकर बात की थी कि हॉल अच्छा बने यह तो हम चाहेंगे ही, लेकिन इस हॉल को बनाने में आज तो तुम दो जने खूब करीब हो, पर अल्टीमेटली कोई भी काम करते-करते डिफरन्स ऑफ ओपिनियन्स होने वाले ही हैं और इसमें भी एक आर्किटेक्ट-इंजीनियर और दूसरा मेरे जैसा! पर मैंने एक चीज देखी कि दोनों के मन में कभी फर्क पड़ा नहीं। यह बहुत बड़ी चीज बनी। हॉल बनाने का मक़सद था कि अपने स्वभाव, अपने मान, अपनी डिमान्ड्स, अपनी वॉन्ट्स, अपनी लाइकिंग्स छोड़ करके सामने वाले का स्वीकार करके 'सुहृद्भाव' रखें। मुझे पता तो था न कि मिलन को तो यही ढंग पसंद आएगा और आशीष को इसी तरह चाहिए। कभी-कभी दोनों को अलग-अलग बुला कर अलग-अलग बात भी की, लेकिन तब भी दोनों एक मत होकर हमेशा आए। आशीष, भले ही अनएज्युकेटेड है, लेकिन है बहुत क्लेवर। इन दोनों की एप्रोच ऐसी नहीं थी कि हमारी जो काबिलियत है, हमारी जो स्कील है–हम उसे दिखा दें। **अकसर हम सत्संग में ऐसा ही करते हैं। प्रभु ने हमें कोई स्कील दी होती है, तो हम सत्संग के प्लेटफॉर्म पर उसको शो करने–उसे एक्सपोज करने की कोशिश करते रहते हैं,** जिससे सब देखे कि मेरी क्या एफिशियन्सी है। **इनका ढंग मैंने अलग देखा इनकी यह कोशिश रहती कि इस एफिशियन्सी से गुरुजी को कैसे राजी करें?** यहाँ फर्क पड़ गया! **अगर दोनों जनें अपनी-अपनी एफिसियन्सी दिखाने के इन्टेन्शन से चलते, तो यह बात नहीं बनती।** दोनों को ऐसा था कि गुरुजी को हमारी स्कील से अच्छा से अच्छा–जिस तरह गुरुजी को चाहिए, वैसा बनाकर दें... **आज जो हर एक को फील होता है कि हॉल बहुत अच्छा बना हुआ है–यह सरसता-मिठास जो प्रगटी हुई है, उसकी वजह भी यही है कि साधु को केन्द्र में रखकर कोई भी क्रिया करेंगे, तो उसमें प्रभु मिठास भर देते हैं...**

समझ कर रखना–साधु हमारे जीवन में हमारे संसार को उजाड़ने के लिए नहीं आए हैं; वे तो हमारे संसार में अमरत्व-अमृतत्व भर देने के लिए आए हैं। लेकिन हमारी समझ में ही फर्क है।

संत लोगों को संसार की क्या वेल्यू ? वे तो हमारी स्पिरीच्युअल हाईट को ही बढ़ाते रहेंगे। ऐसा नहीं, भगवान स्वामिनारायण ने भुक्ति, मुक्ति और स्थिति तीनों चीजें दे दी हैं। भुक्ति यानि इस जगत का सुख भी। गुणातीतानंदस्वामी के समय में उनके द्वारा कही बात है कि पहले तो कितनी कठिन तपस्या-साधना करनी पड़ती थी, तब भगवान की प्राप्ति होती थी। आज तो सुखपाल में बैठकर शीरा (हलवा) खाकर भगवान भजने की सुविधा महाराज ने कर दी। उस समय सुखपाल मतलब–बहुत बढ़िया बैलगाड़ी, आजकल–बी.एम.डब्ल्यू., ऑडी या मर्सडीज़ जैसी! उसमें बैठकर और शीरा (हलवे) की जगह कई कितनी चीजें आ गई, कितने नाम गिनवाऊँ। बर्गर, पीज़ा फ्रूटसलाड, आईसक्रीम–ये सब खाते-खाते भगवान भजने की सुविधा महाराज ने कर दी। तो ये ब्रह्मानंद करने का महाराज ने जब हमारे जीवन में मौका दिया हुआ है, तब मन की तरफ से नज़र हटाकर उनकी तरफ अपनी नज़र रखें और वे जो कहें उसे करते हुए, आनंद करते रहें– यही गुरुपूर्णिमा की कामना!

– प.पू. गुरुजी

✡✡✡

'योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव' अब बन रहा है 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव'!!!

शीर्षक पढ़ कर स्वाभाविक ही आप सभी को आश्चर्य होगा कि इसका मर्म क्या ? याद होगा कि सन् २००८ में प.पू. गुरुजी के ७१वें प्राकट्य पर्व के मंगलकारी उत्सव में हमने यह उद्‌घोष किया था कि – सन् २०१२ में जब प.पू. गुरुजी ७५ वर्ष पूर्ण करेंगे, तब हम उसे **'योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव'** के रूप में मनाएँगे।

परंतु , जैसा कि हम सभी जानते हैं कि प.पू. गुरुजी गुरुभक्ति अदा करने के लिए प.पू. काकाजी से जुड़ी मंगलकारी तिथि या दिन को प्राथमिकता देने के लिए हमेशा लालायित रहते हैं। सो, समय के चलते हुए ध्यान में आने पर **'यह तो जीवन को धन्य करने का स्वर्ण मौका आ रहा है'** – ऐसी अपने अंतर की भावना व्यक्त करते हुए प.पू. गुरुजी ने कहा कि– २०१२ का वर्ष तो **'गुणातीत समाज की हीरक जयंती'** माना जाए।

प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार को तब ६० वर्ष पूर्ण हो रहे हैं और... जैसा कि प.पू. पप्पाजी कहते थे कि ३ फरवरी १९५२ में जब प.पू. काकाजी को साक्षात्कार हुआ, तब से योगी परिवार पनपा और... मानो गुणातीत समाज की स्थापना हुई। अतः ३ फरवरी तो **गुणातीत समाज का 'बेसतुं वर्ष'** (नूतन वर्ष का प्रथम दिन)!!

सो, अब **सन् २०१२ की ३, ४, ५ फरवरी** के महामंगलकारी दिनों को हम **'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव'** के रूप में मनाएँगे और उसके अंतर्गत **'प.पू. गुरुजी का अमृत पर्व'** भी मना लेंगे।

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 2.12.'10, गुरुवार – एकादशी – व्रत
(2) दि. 16.12.'10, गुरुवार – धनुर्मास प्रारंभ
(3) दि. 17.12.'10, शुक्रवार – एकादशी – व्रत
(4) दि. 31.12.'10, शुक्रवार – एकादशी – व्रत
2011 – नए वर्ष के उपलक्ष्य में
दिल्ली – ताड़देव मंदिर में रात्रि 9:45 से 'मध्यरात्रि महापूजा'
(5) दि. 4.1.2011, मंगलवार – सूर्यग्रहण
(6) दि. 13.1.'11, गुरुवार – लोहड़ी
(7) दि. 14.1.'11, शुक्रवार – मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन
(8) दि. 19.1.'11, बुधवार – **पौषी पूर्णिमा,**
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दीक्षा दिन

R.N.I. 28971/ 77 (Air Mail)
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO** ***FOR*** **YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
***'Taad-dev'*,** Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052